अध्याय 1

थिस्सलुनीके के विश्वासियों के प्रति आभार

अभिवादन (1:1)

[1]पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है: अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे।

आयत 1. पहली शताब्दी में, इस तरह की पत्रियों का आरम्भ सामान्यतः सदा ही लेखक का नाम और उसके आयत और वह पत्री किन लोगों को लिखी गई है उनके सम्बोधन के साथ होता था (उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 1:1, 2; गलातियों 1:1, 2; 1 पतरस 1:1), और अभिवादन जोड़े जाते थे। प्राचीन प्रपत्र का अनुसरण करते हुए पौलुस इस पत्र में पहले अपना और अपने दो सहकर्मियों के नाम लेता है।

लेखक प्रेरित **पौलुस** है, जिसका यीशु के स्वर्गारोहण के बाद मनपरिवर्तन हुआ था (प्रेरितों के काम 9; 1 कुरिन्थियों 15:8) और अन्य जातियों के लिए प्रेरित बन गया था (प्रेरितों के काम 9:15)। क्योंकि उसके प्रेरित होने के अधिकार का थिस्सलुनीके में कोई संदेह नहीं था, वह तो स्वयं को प्रेरित होने के योग्य भी नहीं समझता था जैसा कि उसने अन्य पत्रियों में उल्लेख किया है (1 कुरिन्थियों 1:1; 9:1)। यह पत्र वास्तव में, पौलुस का कार्य है (2:18), परन्तु उसने अपने साथ अपने सहकर्मियों को इस अभिवादन में शामिल किया, सम्भवतः शिष्टाचार के कारण से ऐसा किया।

सिलवानुस (एक रोमी नाम), दूसरे व्यक्ति का वर्णन किया गया है, यह वही सीलास था जो यरूशलेम से अंताकिया में पौलुस के साथ भेजा गया एक नबी था (प्रेरितों के काम 15:22, 32), और यह वही व्यक्ति है जो दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान मुख्य सहायक के रूप में पौलुस के साथ मिला था जिसमें थिस्सलुनीके की कलीसिया की स्थापना हुई थी (प्रेरितों के काम

15:40; 17:1-9)। इसके बाद उसका उल्लेख मात्र एक ही बार हुआ है जब पतरस के साथ था और पतरस की पहली पत्री को लगभग 60-65 ईस्वी के मध्य बाबुल नामक स्थान से लिखा (1 पतरस 5:12)। यह भी सम्भव है कि वह पौलुस के लिए थिस्सलुनीकियों के पहले पत्र का लिखनेवाला (लिपिक) था; परन्तु हम इस विषय निश्चित नहीं हो सकते।

तीमुथियुस, जिसका उल्लेख किया गया है, यह यूनानी पिता और इब्रानी माता का पुत्र था, और वह लुस्त्रा में रहता था। जब वह युवा वयस्क था तो उसका खतना हुआ और सहकर्मी के रूप में पौलुस के द्वारा लिया गया था (प्रेरितों के काम 16:1-3)। उसकी माता और उसकी नानी प्रत्यक्ष रूप से आस्थावान इब्रानी महिलाएँ थीं जो मसीह की विश्वासी बन गई थीं (2 तीमुथियुस 1:5; 3:4-15)। पौलुस का उसके विषय उल्लेखनीय उच्च मत था (फिलिप्पियों 2:19, 20)।

पौलुस ने थिस्सलुनीके की **कलीसिया को** लिखा। कलीसिया के लिए शब्द ἐκκλησία इक्केलेसिया का प्रयोग किया गया जिसका अर्थ है "समूह।" पवित्रशास्त्र परमेश्वर के चुने हुए समूह के विषय कहता है (मत्ती 16:18), साथ ही साथ स्थानीय समूह भी (1 कुरिन्थियों 1:2)। वही शब्द सांसारिक समूहों के लिए भी प्रयोग किया गया है, जैसे प्रेरितों के काम 19:32 में इफिसुस की भीड़। संदर्भ में मात्र संशोधित शब्द से ही भिन्नता का पता लगाना सम्भव है कि यह किस तरह का समूह था। यह समूह थिस्सलुनीके नगर का था इसका अर्थ यह हुआ कि यह थिस्सलुनीके के निवासियों से बना समूह था। यह उचित वाक्य, **थिस्सलुनीकियों की कलीसिया** प्रयोग किया गया है और 2 थिस्सलुनीकियों 1:1 में भी किया गया है। सामान्य रूप से पौलुस ने कलीसिया या संतों के रूप में सम्बोधित किया कुछ स्थानों पर। यहाँ, उसका सम्बोधन थोड़ा सा भिन्न है, वह लोगों के समूह का उल्लेख कर रहा है जो किसी स्थान पर स्थित है। लिओन मौरिस विश्वास करता है कि यह विलक्षण वाक्य इस लिए प्रयोग किया गया क्योंकि पौलुस "अभी तक अपनी सामान्य शैली में स्थापित नहीं हुआ था," क्योंकि यह दोनों पत्रियाँ उसकी आरम्भिक पत्रियाँ थीं।[1] परन्तु, पौलुस के लिखने के इस तरह की शैली के विकास पर विचार करना यह उचित धारणा नहीं है।

आगे यह भी कि, उनका समूह थिस्सलुनीकियों के सभी निवासियों का बना नहीं था, परन्तु वही लोग थे **जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में** थे। सभी मनुष्य पाप के कारण से परमेश्वर से दूर थे (रोमियों 3:10, 23), परन्तु कुछ का परमेश्वर के साथ मेल हो गया था (2 कुरिन्थियों 5:19) और इसलिए "परमेश्वर में थे," जो उनका आत्मिक भाव से पिता बन गया था (रोमियों 8:14-16; गलातियों 4:6, 7)। जिनका मेल हुआ था उन्होंने मसीह

में बपतिस्मा लिया (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:26, 27)। इस तरह से थिस्सलुनीके के लोग जो परमेश्वर और मसीह में थे उन्हीं के लिए यह पत्र सम्बोधित किया गया था।

पौलुस थिस्सलुनीकियों के लिए **अनुग्रह** χάρις (*खारिस*), परमेश्वर की कृपा की कामना की। "अनुग्रह" को अक्सर यूनानी अभिवादन में जोड़ा गया है। इसके अतिरिक्त पौलुस ने **शान्ति** εἰρήνη (*इयरेने*) का अभिवादन किया। यूनानियों के लिए, शान्ति का मूल अर्थ है युद्ध की अनुपस्थिति। परन्तु, इब्रानी भाषा में इस शब्द का अर्थ है שָׁלוֹם (*शालोम*), यह शब्द समृद्धि और किसी के प्राण की तंदुरुस्ती को सम्मिलित करता है। यहूदी अभिवादन सामान्य रूप से *शालोम* सम्मिलित करता है।

थिस्सलुनीकियों के प्रति आभार (1:2-4)

[2]हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, [3]और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं। [4]हे भाइयों परमेश्वर के प्रिय लोगों, हम जानते हैं कि तुम चुने हुए हो।

आयत 2. पौलुस ने **परमेश्वर का धन्यवाद** किया, जैसे कि वह अक्सर अपनी पत्रियों का आरम्भ करता है किसी ऐसे वाक्य के रूप में "धन्यवाद करो," यह यूनानी शब्द εὐχαριστέω (*इयुकरिस्टियो*) से है (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 1:3; 1 कुरिन्थियों 1:4)। प्रत्यक्ष रूप में यह थिस्सलुनीकियों में बहुत अधिक था। वे पौलुस के उत्साह के कारण रहे थे (1:8-10)। पौलुस ने कहा कि वह [उनको] **अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण करता** था। पौलुस की प्रार्थनाओं में विशेष मण्डलियों के साथ ही साथ व्यक्ति विशेष भी पाए जाते थे (2 तीमुथियुस 1:3)। इसके अतिरिक्त, इस बात पर ध्यान देना बड़ा ही आवश्यक है कि उसने **सदा** परमेश्वर का धन्यवाद किया। उसने धन्यवाद के साथ लगातार प्रार्थना की (5:17, 18)।

आयत 3. लगातार स्मरण करते हैं आयत 2 के विचार की निरंतरता दिखाई देती है। अपनी प्रार्थनाओं में "परमेश्वर को धन्यवाद" देने के अतिरिक्त उसने कहा कि वह और उसके सहकर्मी लगातार थिस्सलुनीकियों के प्रयासों को स्मरण रखते हैं। उसने बताया कि यह प्रार्थनाएँ **परमेश्वर पिता** के सामने जाती हैं। अर्थात उनको परमेश्वर के सिंहासन के सामने प्रस्तुत किया था। हम बड़े आत्म-विश्वास के साथ उसके सिंहासन के पास जाते हैं क्योंकि वह हमारा पिता

है (इब्रानियों 4:16)।

विशेष बातें जिनके लिए वह परमेश्वर का धन्यवाद कर रहे थे वे थिस्सलुनीकियों के **कार्य** के द्वारा उत्पन्न **विश्वास**, प्रेम से उत्प्रेरित **परिश्रम** और **आशा** के द्वारा उत्प्रेरित उनकी **दृढ़ता** थी।

विश्वास, आशा और प्रेम यह तीन मुख्य मसीही कृपाओं को लगातार एक साथ किसी दूसरे स्थान में वर्णन किया गया है (5:8; 1 कुरिन्थियों 13:13; कुलुस्सियों 1:3-5; 1 पतरस 1:21, 22)। उन पर दिए गए बल ने संकेत किया कि वे विशेष रूप से महत्वपूर्ण गुण थे इनके कारण से मसीही जीवन में जो उत्पन्न हुआ (प्रोत्साहन या उत्प्रेरण)। सच्चे विश्वास ने कार्यों को उत्पन्न किया (याकूब 2:14-17; इब्रानियों 11); प्रेम यूनानी शब्द ἀγάπη (*अगापे*) से है, इसने परिश्रम या "कड़े परिश्रम" को उत्प्रेरित किया; आशा ने दृढ़ता (धीरज या दृढ़ता) को उत्प्रेरित किया, इसका अर्थ वे सताव और अन्य रुकावटें जिनका उन्होंने सामना किया होने के बावजूद भी बने रहे। अनन्त महिमा में (रोमियों 8:18-25; 15:4) आशा के कारण जो **हमारे प्रभु यीशु मसीह में** है सुनाने के कारण वे बने रहे।

एथलबर्ट स्टाउफर ने अगापे की अपने चर्चा में देखा कि यीशु ने, अपने जीवन और मृत्यु में एक नई वास्तविकता को उत्पन्न किया जो कि *अगापे*[2] शब्द में वर्णित है। मौरिस यह कहते हुए सहमत हुआ,

> यह नया नियम से आरम्भ होता है। न केवल उनके पास यह नया शब्द था, परन्तु उनके पास एक नया विचार था, क्योंकि जैसा यूहन्ना ने कहा, हम किसी भी मानवीय कार्य से *अगापे* क्या है कभी नहीं जान सकते, यहाँ तक कि परमेश्वर के प्रति प्रेम सभी नहीं। यह मात्र परमेश्वर के महान प्रेम से ही क्रूस पर प्रायश्चित करने के द्वारा हम पर दर्शाया गया है (1 यूहन्ना 4:10)।[3]

परमेश्वर का यह महान कार्य एक मानक है जो नया नियम में अगापे के अर्थ को दर्शाता है। वास्तविक अगापे को देखने के बाद हम इसे हमारे अगापे के परिश्रम में अनुसरण करने का प्रयास करते हैं। ए. टी. रॉबर्टसन सही रूप से कहा कि "अगापे श्रेष्ठ प्रकार का प्रेम है।"[4] आयत चार में ध्यान दें कि मसीही "परमेश्वर के प्रिय [अगापाओ, शब्द से क्रिया] लोग हैं।"

आयत 4. हे भाइयो (ἀδελφός, *एडेलफोस*) यह एक प्रीतिकर शब्दावली है जिसका पौलुस ने इस पत्री में बार-बार प्रयोग किया (2:1; 3:2; 4:6; 4:10)। यह मात्र थिस्सलुनीकियों की पत्री में ही 25 बार प्रयोग किया गया है। सभी व्यक्तियों से **परमेश्वर ने प्रेम किया** (ἠγαπημένοι ὑπὸ [τοῦ] θεοῦ, *एगापेमेनोई हुपो* [*टाऊ*] *थियो*) (देखें यूहन्ना 3:16), परन्तु केवल मसीही लोगों

ने ही परमेश्वर के प्रेम की पहल स्वीकार किया है। इसलिए, मसीही लोग विशेष भाव में, "परमेश्वर के द्वारा प्रेम किए हुए हैं" उसमें उनका मसीह के द्वारा उससे मेलमिलाप हो गया है (2 कुरिन्थियों 5:19)। यहूदा 21 प्रकट करता है कि आज्ञापालन करते हैं वे परमेश्वर के विशेष रूप से प्रेम में हैं। परमेश्वर के साथ इस विशेष सम्बन्ध के कारण, मसीही लोग उसके द्वारा चुने हुए लोग हैं। पौलुस ने इस चुनाव का संकेत दिया जब उसने लिखा **तुम चुने हुए हो** ("तुम्हारा चुनाव"; KJV)।

मण्डली के लोग मुख्य रूप से अन्य जाति के लोग थे, फिर भी पौलुस ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह अब वह परमेश्वर के चुने हुओं का एक भाग थे, जैसे यहूदी लोग पुराना नियम में परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। परमेश्वर के द्वारा चुने हुओं के रूप में मुख्य रूप से हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम और चिन्ता पर निर्भर रहते हैं। क्या उसने पहला कदम नहीं बढ़ाया नहीं तो हमारा मेल-मिलाप ही न होता (यशायाह 64:6), परन्तु कुछ शर्तें हैं चुने जाने के लिए जिनको पूरा करना अवश्य है।

दरअसल, 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 इसे स्पष्ट करता है कि वह जो "सत्य में विश्वास और आत्मा के द्वारा शुद्ध" होने के द्वारा चुना गया है। वे जो पवित्र आत्मा के कार्य का लाभ नहीं उठाते और विश्वास नहीं करते (एक धारणा जिसमें आज्ञाकारिता पाई जाती है) वह उद्धार नहीं पाते। यह विश्वास या बिना किसी संदेह के भरोसा इसमें लगातार विश्वास करना (या आज्ञाकारिता) भी पाया जाता है, जैसा कि 2 पतरस 1:5-11 में देखा गया है, जहाँ पर यह स्पष्ट किया गया है कि यदि हमें अपने चुने जाने को निश्चित करना है तो हमें हमारे जीवनों में समझ और संयम को रखना है (आयत 10)। यहाँ तक कि इस पत्री में, यह प्रत्यक्ष है कि थिस्सलुनीके के विश्वासी सच्चाई से भटकने की सम्भावना से बाहर नहीं बचाए गए थे (3:5; 4:6; 5:6-9)। इस निष्कर्ष पर पहुँचना है कि परमेश्वर ने चुना है, सबसे पहले, कुछ लोग उद्धार के लिए (जिन्होंने विश्वास किया और आज्ञापालन किया), दूसरे, विनाश के लिए एक समूह (जिन्होंने अविश्वास किया और अवज्ञा की)। हम निश्चय करें किस समूह में होंगे।

सही समूह में होने के लिए हमें सुसमाचार की आज्ञापालन के द्वारा आरम्भ करना है और बढ़ने के द्वारा परमेश्वर के आचरण में रहना है और विश्वास, समझ गुणों में जोड़ना है। इस विचार की तुलना कुलुस्सियों 3:12-17 के साथ करें, जो कि एक अच्छा विवरण है कैसे परमेश्वर के चुने हुओं को आचरण करना है या जीवन व्यतीत करना है। यह भी ध्यान दें कि पौलुस ने कहा वह जानता है कि परमेश्वर ने उन्हें चुना है। उसका उनके मनपरिवर्तन के विषय कोई संदेह नहीं था कि परमेश्वर ने उन्हें चुना है। प्रेरित की ओर से कथन सुनना कि वे परमेश्वर के द्वारा चुने हुए हैं नए मसीहियों के लिए यह आश्वस्त करने वाला

कथन था।

थिस्सलुनीकियों के चुने जाने का निश्चय (1:5-7)

5क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल शब्द मात्र ही में वरन् सामर्थ्य और पवित्र आत्मा में, और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा है; जैसा तुम जानते हो कि हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे। 6तुम बड़े क्लेश में, पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ, वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे। 7यहाँ तक कि मकिदुनिया और अख्या के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने।

आयत 5. सुसमाचार शब्द का अर्थ है "खुशखबरी।" इस विषय में, सुसमाचार मसीह के द्वारा हमारे पापों से बच जाने की सम्भावना है। इसलिए सबसे पहले, यह सुसमाचार परमेश्वर का है (2:8, 9), यह पौलुस और तीमुथियुस का भी है इस भाव में कि इन व्यक्तियों ने इसे ग्रहण किया, इसका अभ्यास किया और इसका प्रचार किया। सुसमाचार उनके जीवन का एक अंग बन गया था। इसके मूलभूत तत्व (1 कुरिन्थियों 15:1-11) वही हैं जो अन्य सत्यनिष्ठ प्रचारकों के द्वारा प्रचार किया गया था (प्रेरितों के काम 2:22-36 से तुलना करें)। यह तत्व स्पष्ट रूप से **वचन** में घोषित किए गए; परन्तु उनका प्रचार सामर्थ्य के साथ था जब उन्होंने प्रस्तुत किया (प्रेरितों के काम 17:1-9), यहाँ तक कि उस स्तर पर भी जहाँ "बड़ी संख्या में ईश्वर का भय मानने वाले यूनानी" लोग आश्वस्त हुए थे। वाक्य **सामर्थ्य** में यूनानी शब्द δύναμις (*डुनामिस*) से अनुवाद किया गया है और इसका अर्थ संदेश के शब्द मात्र में छुपा नहीं है परन्तु अर्थपूर्ण रीति से "सामर्थ्य के साथ" भी है, अर्थात संदेश के पीछे ईश्वरीय वास्तविकता है।[5] इस तरह से पौलुस सम्भवतः परमेश्वर के आचरण का उल्लेख कर रहा था जिससे उनको प्रभावशाली ढंग से प्रचार करने में परमेश्वर ने सहायता की। उनके शब्द खोखली बातें नहीं थी; परन्तु उनमें **बड़े निश्चय** की गूँज थी। यह सामर्थ्य **पवित्र आत्मा** के साथ भी जुड़ी हुई थी, सम्भवतः उन आश्चर्यकर्मों का उल्लेख कर रही थी जो प्रस्तुति के समय पौलुस ने किए जिसने परमेश्वर की उपस्थिति को प्रचार के वचनों में उसकी पुष्टि की (देखें 1 कुरिन्थियों 2:4, 5; 2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:1-4)।

आगे चलकर उसने बताया थिस्सलुनीकियों के साथ रहते हुए उसने कैसा आचरण किया था। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि पौलुस ने कहा कि भाई जानते थे **हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे**। इस में स्वयं-बचाव का भाव है, जो कि दूसरे अध्याय में पूर्ण रूप से विकसित हो गया था।

पौलुस और उसके सहकर्मियों ने स्वयं के स्वार्थ के लिए कुछ नहीं किया था; इसके बजाय उन्होंने सबकुछ वहाँ के **लोगों के लिए** किया था। उन दिनों में बहुत से चलते फिरते प्रचारकों के जीवन से उनका जीवन पूर्ण रूप से भिन्न था। इसलिए, उसके चुने जाने की निश्चितता का भाग इस तथ्य से आया कि नैतिक रूप से शुद्ध और निष्ठावान व्यक्तियों ने पवित्र आत्मा समर्थित प्रचार किया। परन्तु उसकी निश्चितता का दूसरा कारण था, अर्थात, जिस तरीके से थिस्सलुनीकियों ने संदेश को प्राप्त किया था (देखें आयत 6).

आयत 6. ... की सी चाल चलनेवाले (μιμητής, *मिमेटेस*) वे लोग हैं जो दूसरों को देखते हैं, उस व्यक्ति को आदर्श के रूप में प्रयोग करने का प्रयास करते हैं। क्योंकि पौलुस जानता था कि वह सत्यनिष्ठा से प्रभु के लिए जीने का प्रयास कर रहा था (1 कुरिन्थियों 4:4), वह दूसरों को कह सका कि वे उसका अनुसरण करें (1 कुरिन्थियों 11:1) और विशेष रूप से यीशु की सी चाल चलें। थिस्सलुनीकियों ने पौलुस और उसके सहकर्मियों का अनुसरण करने का प्रयास किया; परन्तु उनके द्वारा वे वास्तव में "प्रभु यीशु का" अनुसरण कर रहे थे, क्योंकि पौलुस बड़ी चौकसी से **प्रभु** के आदर्श का अनुसरण कर रहा था (1 कुरिन्थियों 11:1; 4:16) हमारे परिवर्तित विश्वासी सहज रूप से हमारा अनुसरण करेंगे। क्या वे राज्य को पहले और परमेश्वर के लिए त्याग को पहले रखा हुआ पाएंगे या वे इस बात को देखेंगे कि हमारी शिक्षा "मात्र शब्द" ही है, सांसारिक बातें पहले आती हैं और बड़ी कठिनाई से त्याग के अर्थ को समझते हैं? मसीहियत के सच्चे शिक्षकों को अपने वचनों के साथ-साथ अपने जीवनों से सिखाना चाहिए।

यह भाई **बड़े क्लेश** में होने के बावजूद भी विश्वासयोग्यता में बने रहे, आम तौर पर इसलिए कि उनके पास अनुसरण करने के लिए एक अच्छा आदर्श था। यह वाक्य कठिन समय का संकेत करता है। उनके सताव का स्रोत सम्भवतः यहूदी लोग ही थे (प्रेरितों के काम 17:5-9) और भी सम्भव है उनके संगी यूनानी लोग (2:14; देखें 2 तीमुथियुस 3:12)।

पवित्र आत्मा के आनन्द यह संकेत करता है कि जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के संदेश की आज्ञाकारिता के लिए अपना हृदय खोलता है, पवित्र आत्मा किसी तरह से आनन्द देता है। वास्तव में, यह जानना आनन्द की बात है कि हमारा अब हमारे सृजनहार के साथ मेल हो गया है और हम उसका सामना कर सकते हैं जिसका सामना हमें करना है। प्रेरितों के काम में नए विश्वासियों के द्वारा आनन्द के अनुभव के विवरण पर ध्यान दें (प्रेरितों के काम 8:39; 16:34)।

यह आनन्द जो थिस्सलुनीकियों ने महसूस किया था उनके दुःख पर प्रबल हो गया था, जो कि सताव की पीड़ा के साथ आया था। उनकी आंतरिक शान्ति जीवन के बाहरी परिस्थिति पर कहीं अधिक भारी थी (रोमियों 8:18 से तुलना

करें)।

वह ढंग जिसमें उन्होंने संदेश को प्राप्त किया था, जिसके परिणामस्वरूप आनन्द आया जो कि पवित्र आत्मा ने उनके हृदयों में उण्डेला था, एक अन्य कारण बन गया था कि क्यों पौलुस इतना निश्चित था कि वे चुने हुओं में से हैं।

आयत 7. पौलुस के समय में, मकिदुनिया और अख्या रोमी साम्राज्य के दो प्रान्त थे। **अख्या** दक्षिणी भाग था जिसे आज हम यूनान (ग्रीस) कहते हैं जिसमें कुरिन्थुस और अथेने शामिल है। **मकिदुनिया** मुख्य रूप से उत्तरी भाग था जिसको अब हम यूनान (ग्रीस) कहते हैं इसमें बिरिया, फिलिप्पी, और थिस्सलुनीके शामिल थे। पौलुस ने कहा थिस्सलुनीके के विश्वासी पहले अनुसरण करने वाले बने (आयत 6) उसका और उसके सहकर्मी और फिर वे स्वयं एक "उदाहरण" (NIV), या **आदर्श** बने, आस पास के क्षेत्र के विश्वासियों के लिए। "उदाहरण" शब्द τύπος (*टूपोस*) से आता है, जिसका अर्थ है चोट से निशान बनाना, निशान जैसा यूहन्ना 20:25 में है, एक उदाहरण, या एक नमूना।[6] जैसा कि पहले ही देखा गया है, उन्होंने पौलुस का अनुसरण किया जैसे उसने मसीह का अनुसरण किया (1 कुरिन्थियों 11:1)।

प्रभु यीशु का अनुसरण करने में किसी का स्तर और प्रभु के विश्वासयोग्य सेवक एक वह स्तर है जिसके लिए वह एक उदाहरण है जो तब उत्साहित करेगा और अन्य लोगों को प्रभावित करेगा। थिस्सलुनीकियों ने सम्भवतः तो यह भी महसूस नहीं किया होगा कि उनका उदाहरण दूसरों के लिए कितना उत्साहवर्धक था, परन्तु लोगों का उदाहरण दूसरे लोगों पर हमेशा ही प्रभाव छोड़ता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। उनके उदाहरण ने सारे मकिदुनिया के और अख्या के सैकड़ों विश्वासियों को प्रभावित किया। नया नियम में यही एक मात्र कलीसिया है जिसको दूसरों के लिए आदर्श कहा गया है। यह **विश्वासी** निस्संदेह, वे थे जिन्होंने सुसमाचार का पालन किया था। वे जिन्होंने प्रेरितों के काम 2:41 में बपतिस्मा लिया था उनको आयत 44 में "विश्वासी" कहा गया।

थिस्सलुनीकियों के उदाहरण का प्रभाव (1:8-10)

[8]क्योंकि तुम्हारे यहाँ से न केवल मकिदुनिया और अख्या में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं। [9]क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, [10]और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है।

आयत 8. यह आयत, 9 और 10 आयत के साथ बताता है कि किस भाव से थिस्सलुनीके के विश्वासी "उदाहरण" थे (आयत 7)। इस तरह से उनके उदाहरण का विचार इस अध्याय के अन्तिम तीन पदों में लगातार विद्यमान है। **प्रभु का वचन** (सुसमाचार), साथ ही साथ **परमेश्वर के प्रति** उनके **विश्वास** (πίστις, *पिसटीस*) (उनके मानक के रूप में परमेश्वर के सन्देश का स्वीकार किया जाना) की **चर्चा फैल गई**। उनके वर्तमान विश्वास का लक्ष्य मूर्ति नहीं था परन्तु सच्चा परमेश्वर था।

"चर्चा फैल गई" ऐसा वर्णन करता है जैसे गड़गड़ाहट या तुरही की आवाज जो गूँजती है। पूर्ण काल क्रिया का प्रयोग संकेत करता है यह सुनाई दिया गया और अभी तक सुनाई दे रहा है। अर्थात, थिस्सलुनीकियों की कलीसिया एक गूँजने वाला यंत्र बन गई थी। इस घटना की सम्भावना की बढ़त इस तथ्य के साथ हुई कि इस नगर में एक बढ़िया बंदरगाह था जहाँ लगातार व्यावसायिक कार्य होते रहते थे और यह इगनेशियन मार्ग पर था, जो कि पूर्व और पश्चिम जाने के लिए रोमी मुख्य मार्ग था। इस तरह से उनसे सुसमाचार और उनके स्वीकार किए जाने के विषय वचन सारे **मकिदुनिया, अख्या** और **हर जगह** पर पहुँच गया ("हर जगह पर"; NIV)।

"हर जगह" सम्भवतः एक अतिशयोक्ति है—एक विस्तार जो धोखा देने के लिए प्रयोग नहीं किया गया। यह प्रभावशाली ढंग से बताता है कि जो संदेश पौलुस और उसके साथियों ने लाया था उसके विषय अब और **कहने की आवश्यकता ही नहीं** थी। लोग जिनकी इनके साथ भेंट हुई, सब कुछ पहले ही सुसमाचार सुन लिया था। संदेश कम से कम दो साधनों के द्वारा फैला: पहला, वहाँ से गुजरने वाले लोगों के द्वारा और उनको बताया गया और उनके द्वारा मनपरिवर्तन करने के द्वारा और दूसरा, अपने लोगों के प्रचार करने के लिए भेजने के प्रयास करने के द्वारा।

क्या हमें थिस्सलुनीकियों के "आदर्श" का अनुसरण करने की जरूरत है ताकि सुसमाचार हमसे से बाहर जाए और हमारा विश्वास जाना जाए?

आयत 9. यह आयत, 10 आयत के साथ, कहानी की मुख्य बातें प्रकट करता है जो पौलुस और उसके साथी दूसरों से सुन रहे थे। उन्होंने एक वास्तविक **नमस्कार** या "अभिवादन" दिया था (RSV)।

थिस्सलुनीके के लोग **फिरे** थे। NIV उसी शब्द का अनुवाद "बदल गए" के रूप में करता है और दर्शाता है कि इस बदलाव के बिना कोई व्यक्ति "स्वर्ग के राज्य" का भाग नहीं बन सकता (मत्ती 18:3)। विश्वास और पश्चाताप, या मान का बदलाव, उनकी जीवन शैली में बदलाव को लाया। "मुड़ जाना" शब्द ἐπιστρέφω *(एपिस्ट्रीफो)* से आया है, जो कि मुड़ने के लिए पुरानी क्रिया है। जिसे प्रेरितों के काम में परमेश्वर की ओर "मुड़ने" के लिए अभिव्यक्ति किया

गया है (देखें प्रेरितों के काम 3:19)।[7]

यह बदलाव **मूर्तियों** या बुतों से था, जो देवताओं जैसे ज्यूस, अपोलो और अरतिमिस को प्रस्तुत करते थे (रोमी देवी डायना के लिए यूनानी प्रतिरूप); परन्तु क्योंकि देवता मात्र कल्पनाओं में ही होते हैं, बुत जिसकी वास्तव में पूजा होती थी। मकिदुनिया के लगभग सभी छुट्टियाँ और त्योहार इन्हीं देवताओं पर आधारित होते थे, उनके मन्दिर सामाजिक जीवन के मुख्य स्थान होते थे। इन नए मसीहियों को अपने पड़ोसियों के साथ इन क्रियाओं को छोड़ने के लिए सहमत होना था। वे सकारात्मक पक्ष की ओर मुड़े, जो बहुत अच्छा था—एक **जीवित और सच्चे परमेश्वर** की ओर जो मृतक नहीं था और मूर्तियों की तरह निष्क्रिय नहीं था जिन्हें उन्हें निकालना था (यहोशू 3:10; यिर्मयाह 10:1-7)। उन मूर्तियों की तुलना में परमेश्वर "सच्चा," या वास्तविक है, जो कल्पना की गढ़ंत कहानियाँ हैं (1 कुरिन्थियों 8:4-6)।

थिस्सलुनीके के लोग इस सच्चे परमेश्वर की ओर उसकी सेवा करने के लिए मुड़ गए थे। **सेवा** के लिए यूनानी शब्द δουλεύω *(डोयूलियो)* लिया गया है, जिसका वास्तविक अर्थ है "एक दास के समान" सेवा करना, और लगातार सेवा करते रहना। मसीहियत का अर्थ है इस संसार में अपने जीवन भर के लिए स्वयं को पूर्ण रूप से देना (रोमियों 6:15-18)। यीशु ने हमें सेवा करने का सिद्ध उदाहरण दिया है (मत्ती 20:28)। यदि विषय को सही तरीके से देखा जाए तो हमारी सेवा आनन्द पूर्ण होगी।

आयत 10. आयत 9 में, थिस्सलुनीकियों को सेवा करते हुए देखा गया था। यहाँ हम उनको बाट जोहते हुए सेवा करते देखते हैं। **बाट जोहना** यूनानी शब्द ἀναμένω *(अनामिनो)* से लिया गया है। वे यीशु की वापसी की बाट जोह रहे थे। रॉबर्टसन ने कहा कि *अनामीनेन* वर्तमान क्रिया का सामान्य रूप है और इसलिए यह प्रत्यक्ष है और अर्थ है "बाट जोहते रहना।"[8] मसीही लोग प्रभु के आने की "निरन्तर आशा" में लगे हुए हैं।

इन पदों में, हम उन मुख्य बातों को देखा है जो पौलुस ने उनको प्रचार किया था। (अन्य जातियों के लिए संदेश, देखें प्रेरितों के काम 14:15-17; 17:22-31।) यीशु प्रतिज्ञा करता है कि वह वापस आएगा (यूहन्ना 14:3), और यह कि उसका आना आज्ञा मानने वालों के लिए एक बहुत बड़ी आशीष होगी, इसलिए वे उसकी "उत्साह से बाट जोहते" हैं (फिलिप्पियों 3:20)। इस कारण से, परिपक्व मसीहियों के पास परमेश्वर के दिव्य **पुत्र** की वापसी का लगातार बाट जोहने का अनुभव है। उसका प्रभुत्व प्रमाणित हुआ जब उसने (पिता ने) **उसे मरे हुओं में से जिलाया** (1पतरस 1:3; प्रेरितों के काम 2:24-33)। यह वही जीवित यीशु है—मृतक मूर्तियों के विपरीत—जो हमारी आराधना का लक्ष्य है।

यह भी वही यीशु है जो हमें **आने वाले प्रकोप से बचाता है**, क्योंकि हम तो गम्भीर खतरे में थे। भले ही लोकप्रिय न हो, नरक में विनाश, अनन्त दण्ड का विचार, बाइबल आधारित है। यह एक बार फिर इस बात पर जोर दिया गया है कि अन्त समय में परमेश्वर अवज्ञाकारियों पर अपना क्रोध भेजेगा। परमेश्वर का क्रोध मनुष्य के क्रोध की तरह प्रतिशोधी या बेकाबू नहीं है इसके बजाय वह पाप और दुष्टता के विरुद्ध अत्यन्त सख्त है, जो कि "बातों के निपटारे" की मांग करता है। जैसा कि उसका प्रेम हमारे प्रेम से गहरा है, तो उसका क्रोध भी अधिक प्रचण्ड है, जो कि अवाज्ञाकारियों के विरुद्ध होगा (2:16; प्रेरितों के काम 17:28-31; रोमियों 2:5-8)। परमेश्वर नहीं चाहता कि मनुष्य इस तरह से पीड़ित हों। वह उनको बचाना चाहता है या उनको उस क्रोध से दूर रखना चाहता है अर्थात इस दण्ड से, इसलिए मसीह के द्वारा हमारे लिए बचाव का उपाय किया गया है। थिस्सलुनीके के लोग (और सभी विश्वासयोग्य मसीही) यीशु के द्वारा उस क्रोध से "बचाए गए" हैं।

अनुप्रयोग

वर्षों पहले, एक सुसमाचार प्रचारक ट्रेन से यात्रा द्वारा एक सभा में प्रचार के लिए जा रहा था। उस ट्रेन में बैठने के स्थान के गलियारे की दूसरी ओर उसके सामने एक मसीही डिनोमिनेशन का प्रचारक भी बैठा हुआ था। यात्रा के दौरान, उन दोनों में प्रभु के पुनःआगमन के बारे में बातचीत होने लगी। डिनोमिनेशन के प्रचारक ने कहा, "प्रभु ने मुझ से कहा है कि वह तीन वर्ष के भीतर ही आ जाएगा।" सुसमाचार प्रचारक ने कहा, "प्रभु ने मुझे मरकुस 13:32, 33 में बताया है कि उसने आपसे ऐसा कुछ नहीं कहा।" निःसन्देह वह सुसमाचार प्रचारक ही सही था। कोई नहीं जानता है कि प्रभु लौट कर कब आएगा, लेकिन हम उसके आने के बारे में थिस्सलुनीकियों को लिखी गई पौलुस की दोनों पत्रियों से बहुत कुछ सीखते हैं।

पहला तथा दूसरा थिस्सलुनीकियों प्रभु यीशु के पुनःआगमन पर केंद्रित हैं। पहला थिस्सलुनीकियों दूसरे आगमन के बारे में एक संतुलित दृष्टिकोण देता है। यह पाठकों को निमंत्रित करता है कि वे भूतकाल में हुए अपने मनपरिवर्तन का ध्यान करें (1:1—3:13), अपने अन्दर अपने समर्पण पर विचारें (4:1-12), और भविष्य में होने वाले मसीह के आगमन की ओर दृष्टि लगाएं (4:13—5:11)।

प्रकाशन की प्रक्रिया (1:1)

पवित्र शास्त्र का एक बड़ा भेद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वे आए हैं।

यद्यपि हम परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए जाने की बारीकियों को तो नहीं जान सकते हैं, हम मुख्य बातों को जान सकते हैं।

1 थिस्सलुनीकियों की इस प्रथम आयत में, यह प्रकट होता है कि कैसे परमेश्वर अपने वचन को हमारे पास लेकर आया।

परमेश्वर ने अपना प्रकाशन पवित्र आत्मा के द्वारा दिया। यह सत्य इस प्रथम आयत में निहित है, परन्तु 5 आयत का यह स्पष्ट कथन है। यहाँ हम बाइबल के प्रकाशन के दिव्य स्रोत को देखते हैं।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को स्मरण कराया कि ये पत्रियाँ उन पर अनिवार्य हैं। वे समस्त कलीसिया के लिए थीं (1 थिस्सलुनीकियों 5:27)। कलीसिया को उन लोगों पर विशेष ध्यान रखना था जो पत्रियों का पालन नहीं करते थे (2 थिस्सलुनीकियों 3:14)। जैसा उसने कुलुस्सियों से कहा, इन पत्रियों को मण्डली में सार्वजनिक रूप से पढ़ा जाना था (कुलुस्सियों 4:16)। पौलुस के निर्देश इन पत्रियों के पीछे पवित्र आत्मा की प्रेरणा की ओर संकेत करते हैं।

उसका प्रकाशन हम तक मानवीय माध्यम से होकर आया। परमेश्वर ने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मनुष्यों को उपयोग किया। जब पौलुस थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को लिख रहा था, तब परमेश्वर ने इस प्रेरित संदेशवाहक का मार्गदर्शन पवित्र आत्मा के द्वारा किया। यहाँ हम प्रकाशन का मार्ग देखते हैं।

परमेश्वर ने हमें अपना वचन लेखों के द्वारा दिया। यह लिखित सन्देश था, ऐसा प्रकाशन जिसे अपने हाथ में पकड़ा और पढ़ा जा सकता था। इस विचार में हम प्रकाशन का माध्यम देखते हैं। परमेश्वर हमारे मन से होकर हमें खोजता है; वह चाहता है कि हम उसके सन्देश को पढ़ें, समझें और फिर उस पर कार्य करें।

ईश्वरीय प्रकाशन एक परिस्थिति के द्वारा आया। परमेश्वर ने एक स्थानीय मण्डली की आवश्यकता के लिए दिए गए प्रकाशन का उपयोग सारे संसार के लिए उपयोगी सत्य को प्रगट करने के लिए किया। उसने कुछ विशेष लिया और उसे सामान्य बना दिया। ए. टी. रॉबर्टसन ने कहा, "पौलुस की पत्रियाँ समय के लिए लेख हैं ... , वास्तविक आपातकाल का सामना करने के लिए [लिखी गईं]।"[9]

पौलुस को थिस्सलुनीकियों की, जो उस समय सताव का सामना कर रहे थे, चिन्ता थी। वे विश्वास में तरुण थे और उनमें कई बातों को लेकर भ्रान्तियाँ थीं, विशेषकर यीशु के पुनःआगमन के विषय में। पौलुस ने अपनी यह पहली पत्री उन में से कुछ भ्रान्तियों के निवारण के लिए लिखी। यहाँ हम उस परिस्थिति को देखते हैं जिस के कारण परमेश्वर के इस प्रकाशन का जन्म हुआ।

परमेश्वर का प्रकाशन कितना महान है! इसके बिना, हमारे लिए उसकी इच्छा जानने की कोई आशा नहीं है। इसके साथ, हमारे पास हर समय और अनंतकाल के लिए उसका सिद्ध मार्गदर्शन है। इसे मनुष्य का वचन नहीं वरन परमेश्वर का वचन जानकर स्वीकार करना चाहिए। EC

मसीही कौन है? (1:1)

यह अनंतकाल तक का महत्व रखने वाला प्रश्न है जिसका उत्तर हमें बड़े ध्यान से देना चाहिए, क्योंकि हमारे उत्तर को केवल परमेश्वर के उत्तर ही को प्रतिबिंबित करना चाहिए। इस पत्री में पौलुस की आरंभिक टिप्पणियाँ हमें मसीही होने के बारे में परमेश्वर के चित्रण की झलकियाँ दिखाती हैं।

एक मसीही वह है जो कलीसिया का भाग है। पौलुस के अनुसार कोई भी व्यक्ति मसीह की कलीसिया का भाग हुए बिना मसीही नहीं हो सकता है। यह पत्री उन्हें लिखी गई जिन से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया बनी। अर्थात, वह कलीसिया जो थिस्सलुनीकियों के मसीहियों से बनी थी।

एक मसीही वह है जो ईश्वरीय स्थानों में है। पौलुस ने कहा कि कलीसिया परमेश्वर और प्रभु यीशु में है। थिस्सलुनीकियों वाले अपने आत्मिक जीवन को परमेश्वर और मसीह से प्राप्त करते थे, और वे परमेश्वर तथा मसीह के प्रभाव और नेतृत्व में रहते थे। कलीसिया के रूप में, वे परमेश्वर और मसीह के साथ इतनी निकटता से जुड़े हुए थे कि यह कहा जा सकता था कि वे परमेश्वर और मसीह में जीवन व्यतीत करते हैं। यह कैसा विस्मित कर देने वाला विचार है!

एक मसीही वह है जो परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली आत्मिक आशीषों को प्राप्त करता है। पौलुस बड़े खुले रूप से उनके लिए अनुग्रह और शान्ति की इच्छा रख सका। शान्ति कलह की अनुपस्थिति से भी बढ़कर है। नए नियम के काल में परमेश्वर और मनुष्य के बीच के सामंजस्य का परिणाम आत्मा की परिपूर्णता और समृद्धि होता था।

अनुग्रह और शान्ति केवल उन्हीं पर आते हैं जो मसीह में हैं। पौलुस को यह नहीं कहना पड़ा, "मुझे आशा है कि तुम मसीह में आ जाओगे जिससे तुम उसकी आशीषों को प्राप्त कर सको।" वे तो मसीह में थे, और परमेश्वर द्वारा उन्हें प्रदान किए गए अनुग्रह और शान्ति के लिए हृदयों को पूरी तरह से खोल देने के लिए उकसाने के द्वारा, पौलुस उनके प्रति अपने प्रेम को उनकी ओर बढ़ा सका।

एक मसीही वही है जो मसीह का अनुयायी है। लेकिन जब कोई वास्तव में मसीह के पीछे हो लेता है, तो जैसा पौलुस ने चित्रित किया है, वैसा बन जाता है: मसीह की देह में एक, दिव्य क्षेत्र में एक, और वह जो मसीह की

आशीषों का प्राप्त करने वाला होता है। EC

औरों के लिए प्रार्थना करना (1:2, 3)

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को स्मरण कराया कि वह, सीलास, और तीमुथियुस उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। उसने दिखाया कि हमें एक दूसरे के लिए प्रार्थना कैसे करनी चाहिए।

ऐसी प्रार्थना जो साथ जुड़े हुए हृदयों से ऊपर जाए। बहुवचन "हम" संकेत करता है कि तीनों मनुष्य प्रार्थना कर रहे थे। वे तीनों एक होकर प्रार्थना कर रहे थे। संभवतः जितनी बार वे प्रार्थना में एक साथ आते थे वे उन नए विश्वास में आए लोगों का उल्लेख करते थे। एक साथ मिलकर की गई प्रार्थना कितनी सामर्थी होती है!

ऐसी प्रार्थना जो विवरण में विशिष्ट थी। जिस बात के लिए वे धन्यवाद कर रहे थे उसका विशिष्ट वर्णन दिया गया – उनका सक्रिय विश्वास, परिश्रमी प्रेम, तथा दृढ़ आशा। एक प्रचारक के लिए उनमें जिन्हें उसने परिवर्तित किया है, मसीही विशेषताओं को प्रकट देखना, प्रोत्साहन की बात है।

ऐसी प्रार्थना जो सारी मण्डली के लिए थी। प्रार्थना, उन में से केवल एक या दो के लिए नहीं वरन सब के लिए चढ़ाई जाती थी। परमेश्वर की दृष्टि में सभी बहुमूल्य हैं।

ऐसी प्रार्थना जो लगातार की जाती थी। वे लगातार उनके लिए प्रार्थना करते थे। वे केवल किसी एक अवसर पर एक ही बार प्रार्थना नहीं करते थे, वरन बारंबार प्रार्थना करते थे। पौलुस, जो वह प्रचार करता था, उसको अमल में भी ला रहा था, क्योंकि आगे चलकर उसने थिस्सलुनीकियों को उकसाया कि वे "निरन्तर" प्रार्थना में लगे रहें (5:17)। दोनों ही स्थानों पर वही एक यूनानी शब्द, ἀδιαλείπτως (*अडियालिप्टोस*) प्रयुक्त हुआ है।

पौलुस के कथन एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने के लिए अद्भुत मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। अवश्य ही हमें एक दूसरे के लिए और अधिक प्रार्थना करना चाहिए! क्या आप यह नहीं कह सकते हैं कि जब हम अपने भाइयों के लिए प्रार्थना कर रहे होते हैं तब ही हम सर्वोत्तम होते हैं? EC

अपने भाइयों को प्रोत्साहित करना (1:2, 3)

अन्य बातों के अतिरिक्त, पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें लिखा। उसने उन्हें प्रोत्साहित कैसे किया? क्या उसके समान ही, अपने भाइयों के लिए हमारे पास भी प्रोत्साहन के वचन होते हैं?

उनके लिए प्रार्थना करने के द्वारा। उसने उन्हें यह बता कर आरंभ किया

कि वह उनके लिए प्रार्थना कर रहा है। जब भाई लोग जानते हैं कि हम सत्यता के साथ उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं, तो वे प्रोत्साहित और आशीषित होते हैं।

उनकी सराहना के द्वारा। उसने मसीही जीवन जीने में उनकी विश्वासयोग्यता के लिए उनकी सराहना की। जब भाई लोग जानते हैं कि हम उनकी विश्वासयोग्यता के बारे में जानते हैं, तो उन्हें आत्मिक प्रोत्साहन मिलता है।

उन्हें स्मरण करवाने के द्वारा। उसने उनके लिए पुष्टि की कि परमेश्वर ने आरंभ से ही उन्हें चुन लिया था। हमारे विश्वास के लिए यह सदा ही प्रोत्साहन का कारण होता है जब हम स्मरण करते हैं कि हम परमेश्वर के चुने हुओं में से हैं। जो भी मसीह में आता है परमेश्वर उसे बचाता है (इफिसियों 1:3, 4), और उसने अपने सुसमाचार के द्वारा हमें अपने चुने हुए होने के लिए बुलाया है।

प्रत्येक मसीही को प्रोत्साहन देने वाला होना चाहिए, जिस भी किसी अन्य मसीही से वह मिले उसे प्रोत्साहन का वचन दे सके। EC

थिस्सलुनीकियों के लिए धन्यवादी (1:1–3)

पौलुस ने अपने पाठकों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाया। उसने कभी कभी नहीं वरन "निरन्तर" अपनी "प्रार्थनाओं" में "परमेश्वर का धन्यवाद" किया (आयत 2)। वह उनके लिए धन्यवादी क्यों था?

पौलुस *उनके "विश्वास के कार्य" के लिए धन्यवादी था।* विश्वास निष्क्रिय नहीं होता है। सच्चा विश्वास सदा ही कोई कार्य प्रस्तुत करता है। याकूब ने लिखा, "... मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊंगा" (याकूब 2:18)।

पौलुस *उनके "प्रेम के परिश्रम" के लिए धन्यवादी था।* आयत 3 में प्रेम के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द है अगापे। यह शब्द नए नियम में सामान्यतः मसीह के प्रेम के वर्णन के लिए प्रयोग किया गया है। हम से इस प्रकार के प्रेम का अनुसरण करने के लिए कहा गया है (देखें इफिसियों 5:2)। थिस्सलुनीकियों ने मसीह के प्रेम का अनुकरण किया, और अब पौलुस इसके लिए उनकी सराहना कर रहा था।

पौलुस *उनकी "आशा की धीरता" के लिए धन्यवादी था।* उनकी आशा ने उनकी दृढ़ता को प्रेरणा दी यद्यपि वे सताव से होकर निकल रहे थे और मसीही विश्वास में अभी तरुण ही थे। उन्होंने अपनी आँखें अनन्त महिमा प्राप्त करने पर टिका रखी थीं (देखें रोमियों 8:18–39)। उनकी यह आशा "प्रभु यीशु मसीह में" स्थापित थी जो कभी निराश नहीं करता है (आयत 3)।

पौलुस का उसके द्वारा विश्वास में आए लोगों के लिए धन्यवादी होना

"विश्वास," "प्रेम," और "आशा" पर आधारित था, और ये तीनों मसीही अनुग्रह बहुधा एक साथ देखे जाते हैं (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:8; 1 कुरिन्थियों 13:13; कुलुस्सियों 1:3–5)। पौलुस इन भाइयों के अच्छे उदाहरण के लिए परमेश्वर का बड़ा धन्यवादी है। उनके कार्यों से पौलुस को प्रोत्साहन मिला। हमें भी अपने साथी मसीहियों के भले उदाहरणों से प्रोत्साहित होना चाहिए।

प्रोत्साहित करने वाला "*विश्वास का कार्य*" - किसी छोटे से नगर में काम करने वाला अगुवा जो लोगों से मिलने, उन्हें प्रोत्साहित करने, और उन्हें सुधारने के लिए अथक परिश्रम करता है। उसका कार्य उसके विश्वास को दिखाता है।

प्रोत्साहित करने वाला "*प्रेम का परिश्रम*" - एक दम्पति जो अस्सी वर्ष के हैं और सेवकाई के कार्य में पचास से भी अधिक वर्षों से लगे हैं और अभी भी सेवकाई में हैं। ऐसा समर्पण वास्तव में "प्रेम का परिश्रम" है।

प्रोत्साहित करने वाली "*आशा की धीरता*" - एक वृद्ध महिला जो मध्य टेनिस्सी में रहती है और अपने साथ के लोगों के साथ बाइबल अध्ययन करती है, अफ्रीका से आने वाले पत्राचार पाठों को जाँचने का कार्य करती है, और सुसमाचार सिखाने के लिए अफ्रीका की यात्रा करने से नहीं थकती। वह यह सब अपनी "आशा की धीरता" के कारण करने पाती है, जो स्वयं उसके लिए तथा औरों के लिए है।

ऐसे लोग प्रोत्साहित करने वाले होते हैं, परन्तु अपने कार्यों के द्वारा मसीह के साथ चलना दिखाने वाले केवल ये ही नहीं हैं। अच्छे उदाहरण लगभग प्रत्येक मण्डली में मिल सकते हैं। हमें, पौलुस के समान, विश्वासयोग्य सेवकों के लिए धन्यवादी होना चाहिए जो अपने विश्वास, प्रेम, और आशा को दिखाते हैं। EE

परमेश्वर के प्रति धन्यवादी (1:1–5)

परमेश्वर के साथ हमारा सम्बंध हमारे धर्म और जीवन का आधार है। केवल परमेश्वर में ही हमें संपूर्णता से जानने और हमें जो मिलना चाहिए वह देने का ज्ञान, सामर्थ्य और प्रेम है। परमेश्वर के मार्गों के अनुसार उसे प्रतिक्रिया देना ही हमारे लिए तथा उसके एवं दूसरों के साथ हमारे संबंधों के लिए सर्वोत्तम होता है।

1 थिस्सलुनीकियों का पहला भाग पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस के थिस्सलुनीकियों की कलीसिया और मसीह में परमेश्वर के साथ उनके बीते समय के तथा वर्तमान संबंधों के बारे में है। पहले तीन अध्यायों में केवल समाचार ही है और कोई आज्ञा या सैद्धान्तिक व्याख्या नहीं है। ये अध्याय केवल इतना बताते हैं कि पहले क्या हो चुका है और अब क्या हो रहा है। ये संबंधित

लोगों के परस्पर संबंधों में "केवल" अच्छे समाचार के बारे में ही बताते हैं।

किसी भी अन्य व्यक्तिगत पत्र के समान, 1 थिस्सलुनीकियों उन घटनाओं पर केंद्रित है जो लेखक और पाठकों के मध्य संबंध बनने का आधार बनीं। इस पत्री और उन पत्रियों के बीच जो नए नियम से बाहर की हैं, अन्तर यह है कि यह पत्री परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई है इसलिए पूर्णतया सत्य है। यह हमारे व्यवहार में परमेश्वर को भावते हुए संबंध विकसित करने के लिए नमूने का भी कार्य करती है। ये घटनाएं वास्तव में घटित हुईं, और परमेश्वर ने इस पत्री को बचा कर रखा है क्योंकि वह चाहता था कि हम इन सत्यों को जान सकें और इनके द्वारा हमारे जीवन आशीषित हों!

इसलिए, यह एक उद्देश्यपूर्ण समाचार है। यह हमारे मसीही जीवनों में अन्तर लाने वाला समाचार है। यह हमें नया कर देने वाला समाचार है! इस समाचार से हम धन्यवादी जीवन रखने के लिए क्या शिक्षा ले सकते हैं?

परमेश्वर का अंगीकार करें (1:1)। परमेश्वर ने सदा ही हमें अपनी रचना स्वीकार किया है। प्रत्युत्तर में हमें भी उसे अपना रचयिता मान लेना चाहिए। हमारे लिए कितना आवश्यक है कि हम परमेश्वर के प्रति निरन्तर सचेत रहें - उसके अस्तित्व के प्रति सचेत, उसके चरित्र, हमारे प्रति उसके विचार, और उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया के लिए उसकी लालसाओं के लिए सचेत!

जब हम मसीही नए नियम की पत्रियों के आरंभ को पढ़ते हैं, तो हमें वे सब एक समान प्रतीत हो सकती हैं। हम अकसर पहली कुछ आयतों को पढ़ते समय सोचते हैं कि ये शब्द तो जाने-पहचाने हैं और सरलता से समझे जा सकते हैं। हो सकता है कि विस्तार से उनका अध्ययन करने या उन पर मनन करने का कोई विशेष महत्व हमें दिखाई ना दे।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि बाइबल परमेश्वर का लिखित प्रकाशन है। केवल यहीं पर हमें परमेश्वर जो चाहता है उसकी प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। केवल यहीं हमें अपने जीवनों के लिए सही मार्गदर्शन मिलता है। इसलिए, 1 थिस्सलुनीकियों को एक जाने-पहचाने आरंभ वाली प्राचीन पत्री के समान देखने के स्थान पर, हमें इसे परमेश्वर मसीहियों से जो चाहता है उसे जानने का अवसर समझना चाहिए। ये वचन इसलिए लिखे गए क्योंकि परमेश्वर चाहता था कि वे कहे जाएं और क्योंकि परमेश्वर जानता था कि ऐसी परिस्थिति के लिए वे ही सबसे उपयुक्त वचन हैं। ये परमेश्वर के कथन हैं - थिस्सलुनीकियों से और हम से!

मसीही लेखकों और पाठकों के लिए, वाक्यांश "परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में" (1:1) हमें स्मरण दिलाता है कि हमारा सारा जीवन उस पर निर्भर है, क्योंकि, "क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं" (प्रेरितों के काम 17:28अ)। मसीही जी सकते हैं, वार्तालाप कर

सकते हैं, कार्य कर सकते हैं इस यथार्थ के साथ कि परमेश्वर हमारे साथ है, हमारे बगल में है, और हमारे अन्दर है! परमेश्वर और यीशु का निरन्तर बोध रहना हमें प्रतिदिन ईश्वरीय जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित तथा प्रेरित करता है। पौलुस ने यह व्यक्त किया जब उसने कहा, "क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है" (फिलिप्पियों 1:21अ) और "अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है" (गलातियों 2:20ब)।

हम परमेश्वर के साथ जीवन जीने का, दिन के प्रत्येक घंटे उसकी उपस्थिति में होने का यह बोध कैसे विकसित कर सकते हैं? हम इसके विषय अपने मसीही भाइयों और बहनों को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं? थिस्सलुनीकियों वाले ऐसा करने के लिए अन्य देवताओं से अलग हो गए थे (1:9), उन्होंने परमेश्वर के वचन की सत्यता को स्वीकार किया (2:13), जो मसीह के अनुयायी थे उनका अनुकरण किया (2:14), और विश्वास, आशा, तथा प्रेम पर अपने कार्य की प्रेरणा के लिए ध्यान केंद्रित किया (1:3)।

परमेश्वर अपने लोगों के लिए क्या चाहता है? पौलुस का प्रथम विचार था कि वह भाइयों के प्रति "अनुग्रह ... और शान्ति" व्यक्त करे (1:1)। लेखक के मन में प्रभावी अधिकार रखने वाला विचार था कि वह थिस्सलुनीकियों को बताए कि परमेश्वर तथा वह स्वयं उनके बारे में क्या विचार रखते हैं। पौलुस इन तरुण मसीहियों के लिए परमेश्वर का अनुग्रह और शान्ति चाहता था। थिस्सलुनीकियों के लोग तो अपने लिए कई अन्य आशीषों की इच्छा को रखते तथा पाना चाहते होंगे, परन्तु ये दोनों ही सबसे महान थीं।

इस पुस्तक की प्रथम आयत एक उदाहरण भी है कि मसीही कैसे एक-दूसरे की सहायता कर सकते हैं। पौलुस प्रोत्साहन का पत्र लिख रहा था। थिस्सलुनीकियों ने ऐसे उदाहरण के अनुसरण की कीमत को समझा था और अपने शिक्षकों का अनुसरण करने वाले बन गए थे (1:6)। किसी साथी मसीही को प्रोत्साहित कर पाने के लिए आपको कितने समय तक का मसीही होना चाहिए? यह कार्य तो नए मसीही भी कर सकते हैं।

बाइबल कक्षा में बच्चे अपने माता-पिता को ईश्वरीय प्रोत्साहन देने वाले रुक्के लिख सकते हैं। वृद्ध लोग मण्डली के जवानों के लिए धन्यवाद के शब्द कह सकते हैं यह दिखाने के लिए कि वे उनकी सराहना करते हैं। जो सदस्य किसी दूसरे स्थान पर चले गए हैं उन्हें पत्र भेजे जा सकते हैं यह जताने के लिए कि उनके भले कार्य भुलाए नहीं गए हैं वरन अभी भी सराहे जाते हैं। मसीही अन्य प्रदेशों या देशों में अपने मसीही भाई-बहनों को लिख कर उनके प्रति परमेश्वर के अनुग्रह और देखभाल को व्यक्त कर सकते हैं।

एक जानी-पहचानी प्रतीत होने वाली आयत में जीवन भर के लिए भली उपयोगिता मिल सकती है। परमेश्वर ने इसकी ऐसी योजना बनाई है कि हम

उसे पढ़ें, समझें, और करें!

परमेश्वर को धन्यवाद देना (1:2)। धन्यवादी होना मसीही होने का एक भाग है। पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस धन्यवादी शिक्षक थे। वे परमेश्वर से की गई अपनी प्रार्थनाओं में नियमित रूप से धन्यवाद व्यक्त करते थे: "हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं" (1:2)। उनके लिए यह एक शिक्षक के जीवन का महत्वपूर्ण भाग था, परन्तु क्या यह केवल शिक्षकों और प्रचारकों के लिए ही है? यह बहुमूल्य पाठ हम सब के लिए है! प्रत्येक मसीही से कहा गया है कि "और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो" (इफिसियों 5:20अ)। "धन्यवाद" एक ऐसा वाक्यांश है जिसका प्रयोग करना सामान्यतः बच्चों को सिखाया जाता है। मसीहियों को "धन्यवाद" कहना इसलिए नहीं सीखना चाहिए क्योंकि यह शिष्टाचार की अभिव्यक्ति है (और यह शिष्टाचार है!), वरन इसलिए क्योंकि यह ईश्वरीय अभिव्यक्ति है।

यह धन्यवाद देना नए नियम की पत्रियों में जाना-पहचाना विचार है। क्या यह हमारी प्रार्थनाओं का जाना-पहचाना भाग भी है? क्या हम अपने जीवनों में, परिवारों में, और कलीसिया में धन्यवादी होने के कारणों को ढूँढ़ते हैं? क्या जो अच्छा है उसके बारे में विचार करना और फिर परमेश्वर को "धन्यवाद" कहना हमारा स्वभाव है? क्या जैसे जब कुछ बुरा होता है तब परमेश्वर से सहायता माँगने के लिए आतुर होते हैं, वैसे ही जब सब अच्छा चल रहा होता है तब उसे धन्यवाद कहने को हम उतने ही आतुर होते हैं? हम ऐसे जन बनें जो सदा परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं!

आयत 2 में क्या हो रहा था? क्या पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस यूँ ही धन्यवाद की प्रार्थनाएं कर रहे थे? नहीं, जिनके लिए वे धन्यवाद कर रहे थे, वे उन्हें भी बता रहे थे कि वे धन्यवादी हैं। धन्यवाद की प्रार्थना की योजना परमेश्वर द्वारा रची गई, न केवल उसके प्रति हमारी कृतज्ञता को व्यक्त करने के लिए, वरन एक दूसरे के साथ अपने संबंधों को विकसित करने के लिए भी। जब हम भाइयों के लिए प्रार्थना कर लें, टो उन्हें इसके बारे में बताएं। उन परेशान, निराश, दुर्बल आत्माओं को कितनी सहायता मिलेगी यदि भाई उन से नियमित कहें, "मैं आपके लिए प्रतिदिन प्रार्थना कर रहा हूँ!" निःसन्देह वे फिर कभी नहीं कहेंगे, "कोई मेरी आत्मा की चिन्ता नहीं करता है।"

भक्तिपूर्ण जीवनों की सराहना करें (1:3)। धन्यवादी होना वास्तविक होना चाहिए। हमारा धन्यवादी होना, क्या केवल हमारा आज्ञापालन करना है, या हम वास्तव में उन भले कार्यों को स्मरण कर रहे होते हैं जिन के लिए हम धन्यवादी हो सकते हैं? पौलुस जो विचार रखता था उनसे वह प्रेरित हुआ

कि वह थिस्सलुनीकियों के लिए प्रार्थना में कह सके "तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता" (1:3)। उसने इन मसीहियों के अच्छे कार्यों और रवैये के बारे में सोचा और फिर प्रार्थना में परमेश्वर से उनके बारे में बात की। मसीही होने के कारण, हमारे "विचारों" का जीवन हमारे प्रार्थना के जीवन को प्रभावित करेगा। अपनी प्रार्थनाओं को और सुधारने के लिए, हमें अपने विचारों पर ध्यान देना चाहिए।

सामान्यतः हम अपने व्यवहार के प्रशिक्षण के लिए अनैतिक, बुरे, और अवैध कामों से बचकर रहना चाहते हैं, और केवल वह करते हैं जो सही है, लेकिन कभी-कभी हम अपने मन के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान नहीं देते हैं। "मन का नियंत्रण" - औरों के द्वारा नहीं, वरन स्वयं हमारे द्वारा परमेश्वर के निर्देशों के अनुसार - बाइबल का विचार है। जब पवित्रशास्त्र हमें कहता है, "मनन करो" या किसी बात पर "अपने मन को विचार करने दो," तो हमें प्रोत्साहित किया जा रहा है कि अपने मनों को अनुशासित या प्रशिक्षित करें कि उससे हमारे विचार और रवैये सुधारे जाएं।

परमेश्वर हम में कैसे विचार चाहता है? भजनकार ने उस धन्य व्यक्ति के बारे में कहा जो "यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है" (भजन. 1:2)। पौलुस ने कहा, "... जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो" (फिलिप्पियों 4:8)। हमें उस बात का खोजी होना चाहिए जो हमारे साथी मसीहियों के जीवनों में भला है, उस पर विचार करना चाहिए, उस के बारे में प्रार्थना करनी चाहिए, और उन विचारों को औरों के साथ बाँटना चाहिए। परमेश्वर ने कहा है कि इससे हमारी और उनकी भलाई होगी, जिनके जीवनों को हम स्पर्श करते हैं।

परमेश्वर के साथ अपने संबंध के बारे में मनन करें (1:4)। परमेश्वर हमारे बारे में क्या सोचता है? हम इसका पता कैसे लगा सकते हैं? आयत 4 पढ़ें: "हे भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगों, हम जानते हैं कि तुम चुने हुए हो।" यह आयत हमें परमेश्वर के दो विचारों को जो वह थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के बारे में रखता था बताती है: परमेश्वर उन से प्रेम करता था, और परमेश्वर ने उन्हें चुना था। हम जान सकते हैं कि परमेश्वर मसीहियों से प्रेम करता है और हमें चुना है। हम कभी सोच सकते हैं, "उस व्यक्ति से प्रेम करना मेरे लिए कठिन है," या संभवतः "उस व्यक्ति को मसीही होने के लिए मैं तो नहीं चुनता।" जब कुरिन्थुस की कलीसिया में भाइयों के मध्य विरोध हुआ और उन्हें एक देह होकर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, तो उन से कहा गया, "परन्तु

सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक-एक कर के देह में रखा है" (1 कुरिन्थियों 12:18)। जिन्हें परमेश्वर ने अपने परिवार में सम्मिलित किया है वह उन से प्रसन्न है!

यदि हम परमेश्वर की सेवकाई में खरे हैं, तो हम लोगों के प्रति उसके दृष्टिकोण को स्वीकार करेंगे और उस दृष्टिकोण को अपनाने का प्रयास करेंगे। हम कहेंगे, "यद्यपि मैं तो उस व्यक्ति को नहीं चुनता, परन्तु परमेश्वर ने उसे चुना है; और वही सबसे अच्छा जानता है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि परमेश्वर ने उसे चुना है, मैं प्रयास करूँगा कि उस से इस के अनुसार व्यवहार करूँ।" हमें किसी के बारे में यह नहीं सोचना चाहिए कि वह भाईचारे के व्यवहार के योग्य नहीं है; वरन, हमें स्मरण रखना चाहिए कि "उसने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार" (तीतुस 3:5अ)। यह स्मरण रखना कि परमेश्वर ने हमें बचाया जबकि हम इसके योग्य नहीं थे हमारी सहायता करेगा कि हम औरों के साथ वैसा व्यवहार ना करें जिसके वे योग्य हैं, वरन वैसा करें जैसा परमेश्वर उनके साथ करता है - दया के साथ।

परमेश्वर के सन्देश की प्रतिक्रिया दें (1:5)। परमेश्वर सन्देश के द्वारा हम से सम्पर्क करता है। उसने सन्देश के द्वारा अपने आप को प्रगट किया है। वह उद्धार का अपना प्रस्ताव सन्देश के द्वारा भेजता है। वह उसके लोग होने के कारण हमारा मार्गदर्शन सन्देश के द्वारा करता है। हमें उसके सन्देश को क्या प्रतिक्रिया देनी चाहिए?

आयत 5 में परमेश्वर के सन्देश के बारे में दो विचार हैं। पहला है कि सुसमाचार "वचन में" होकर आया। दूसरा है कि सुसमाचार "सामर्थ्य और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है।" परमेश्वर अपने सुसमाचार को फैलाए जाने के बारे में क्या सोचता है इन दोनों ही विचारों से हम पर इसके बारे में कुछ प्रगट होता है।

पहला विचार है कि जब सन्देश का प्रचार होता है तब सुसमाचार का प्रसार होता है। यदि सुसमाचार का सही सन्देश लोगों के जीवनों तक पहुँचना है, तो परमेश्वर के सन्देश को सच्चे और सही शब्दों में सिखाया जाना चाहिए। यदि हम औरों के कथन और जीवनों पर निर्भर रहेंगे, तो जो सन्देश लोगों तक पहुँचेगा वह सिद्ध नहीं होगा। हम यह नहीं कह सकेंगे कि सन्देश सिद्ध था कि नहीं। इसलिए, सुसमाचार का प्रचार आवश्यक था और है। सुसमाचार परमेश्वर के बारे में मनुष्य के विचार नहीं है, परन्तु मनुष्य के लिए परमेश्वर का सन्देश है। पौलुस ने प्रगट किया कि पवित्र आत्मा ने उसे प्रयोग करने के लिए "शब्द" दिए जिससे हम "परमेश्वर के विचार" जान सकें (1 कुरिन्थियों 2:11–13)। जब थिस्सलुनीकियों ने यह सन्देश सुना तो "उसे मनुष्यों का नहीं

परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर, और सचमुच यह ऐसा ही है, ग्रहण किया ..." (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)।

सुसमाचार "सामर्थ्य और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ" भी पहुंचा है। इस विवरण से प्रश्न उठे कि "कौन सी सामर्थ्य, और उसका प्रदर्शन कैसे हुआ?"; "पवित्र आत्मा ने क्या किया?"; "जो 'बड़ा निश्चय' था वह शिक्षकों का था या श्रोताओं का?" आयत 5 का अन्तिम भाग इन प्रश्नों के उत्तरों के लिए हमें बहुमूल्य अंतर्दृष्टि देता है। कथन "हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे" उस सामर्थ्य, पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय का प्रदर्शन था। जब इन अन्यजाति मूर्तिपूजकों ने शिक्षकों के जीवनों को देखा, तो उससे उन्हें सुसमाचार का पालन करने में सहायता मिली। इसमें ना केवल पवित्र आत्मा द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों की अलौकिक सामर्थ्य सम्मिलित थी, वरन ईश्वरीय जीवनों की आत्मिक सामर्थ्य भी थी।

जब प्रचारक बॉब एबने और अन्य लोग 1993 में अलबानिया गए, तो उन्हें एक जवान पुरुष को सुसमाचार सिखाने का सुअवसर मिला। उस मसीही समूह के साथ अध्ययन करने के पश्चात, उस जवान पुरुष ने कहा, "आप अन्य धर्मों से भिन्न हो।" जब बॉब ने उससे पूछा कि यह भिन्नता क्या है, तो उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "आप एक दूसरे से प्रेम करते हैं।" यह वह सशक्त सन्देश था जो उस व्यक्ति को मसीही जीवनों से मिला था। यीशु ने सुसमाचार के साथ इस प्रेम की सामर्थ्य की प्रतिज्ञा सभी मसीहियों से की है: "यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)। हम यह सुनिश्चित करें कि जब भी वचन की शिक्षा दी जाए तो उसके सन्देश का यह प्रदर्शन भी किया जाए!

उपसंहार। अपने भाइयों और बहनों की आत्मिक भलाई के लिए चिंता करना, उनके लिए धन्यवाद के साथ प्रार्थना करना, अपनी प्रार्थनाओं के बारे में उन्हें बताना, और उन्हें परमेश्वर के प्रेम के प्रति आश्वस्त करना, ये सभी परमेश्वर का धन्यवादी अनुयायी होने में सम्मिलित हैं। इन सब बातों का करना हमें तथा औरों को स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर कैसा है और वह अपने लोगों के साथ कैसा व्यवहार चाहता है। जब हम परमेश्वर की सराहना करते हैं, तो उसकी इस सराहना को औरों तक पहुँचाने के लिए ऐसे मार्गों को भी ढूँढ़ेंगे जिनसे उनकी सहायता हो सके। इन आरंभिक मसीहियों की अगुवाई का अनुसरण करें! TP

सुसमाचार कैसे पहुँचता है? (1:2–5)

पौलुस द्वारा थिस्सलुनीकियों के लिए धन्यवाद देने का एक और कारण

था परमेश्वर द्वारा उन्हें चुन लेना। यह चुनाव तब हुआ जब उन्होंने सुसमाचार को ग्रहण किया। परमेश्वर के चुने हुए किसी भी जाति या देश के वे लोग हैं जिन्होंने सुसमाचार को सुना है और उसे स्वीकार कर लेने का निर्णय ले लिया है। रेमन्ड सी. केल्सी ने कहा, " [परमेश्वर का] चुनाव मनुष्य की चुन लिए जाने की इच्छा पर निर्भर करता है ... परमेश्वर के चुनाव करने की प्रक्रिया [के द्वारा]।"[10]

थिस्सलुनीकियों द्वारा सुसमाचार को ग्रहण करने को देखने से हम समझने पाएंगे कि कैसे परमेश्वर आत्माओं को परिवर्तित करके अपने महिमामय परिवार में ले आता है। उन तक सुसमाचार कैसे पहुँचा, और हम तक वह कैसे पहुँचता है?

सुसमाचार वचनों के द्वारा आया। यद्यपि शब्दों की सामर्थ्य ने थिस्सलुनीकियों को परिवर्तित नहीं किया, किंतु सुसमाचार को बोला जाना और लोगों के मन तक पहुँचाया जाना था। सभी सुसमाचार प्रचार बोलने या लिखने के साथ आरंभ होता है।

वह सामर्थ्य के साथ आया। हमारे प्रचार के शब्द केवल आरंभ मात्र हैं, अन्त नहीं। परमेश्वर कैसे अपने वचन को प्रयोग करेगा मानव मन यह समझ नहीं सकता है। अपनी सामर्थ्य के प्रयोग से, वह अपने वचन द्वारा कार्य करता है और हमें वैसा गढ़ता है जैसा वह चाहता है। यद्यपि हम इसे समझा तो नहीं सकते, हम इसका आनन्द ले सकते हैं।

वह पवित्र आत्मा में आया। परमेश्वर का वचन पवित्र आत्मा की तलवार है (इफिसियों 6:17)। पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन द्वारा पौलुस ने उन तक सत्य का वचन पहुँचाया, और उसके द्वारा बोला गया वचन परमेश्वर के उद्देश्य पूरे करने के लिए पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थी किया गया।

वह पूर्ण आश्वासन के साथ आया। वह सभी के लिए परमेश्वर के प्रेम, प्रत्येक व्यक्ति के लिए मसीह की मृत्यु, और जो भी सुसमाचार का पालन करेगा उसके बचाए जाने के पूर्ण आश्वासन के साथ आया। साथ ही, पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस इस भरोसे से परिपूर्ण थे कि परमेश्वर का कार्य किया जा रहा है।

थिस्सलुनीकियों ने प्रचार को सुना था, उसे अपनी आत्माओं में ग्रहण किया था, और पवित्र आत्मा ने उन शब्दों को अपने उपकरण बनाकर उन्हें सुसमाचार का पूरी रीति से पालन करने का मार्गदर्शन दिया। सुसमाचार उन तक इस रीति से आया; आज हमारे पास भी यह इसी रीति से आता है। EC

उनके चुने हुए होने की निश्चितता (1:4–7)

आयत 4 में, पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि थिस्सलुनीके के भाइयों के विषय परमेश्वर ने एक "विकल्प चुना" (NASB) या एक "चुनाव" किया

(KJV)। परमेश्वर के प्रेम में होने के लिए चुना जाना वास्तविक आशीष है।

थिस्सलुनीके के लोग *"परमेश्वर के प्रिय"* थे (आयत 4)। एक रीति से परमेश्वर सबसे प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16), परन्तु केवल मसीही जिन्होंने उसके प्रेम की भेंट को स्वीकार कर लिया है और जिनका मेल-मिलाप उसके साथ हो गया है वे ही इस विशेष रीति से उसके प्रिय हैं। उसके अनुयायियों को " [अपने आप को] परमेश्वर के प्रेम में बनाए" (यहूदा 21) रखने के लिए उसका आज्ञाकारी होना चाहिए।

परमेश्वर के प्रेम में होने के लिए चुने जाना दो बातों पर निर्भर करता है। पहली, यह परमेश्वर के कार्य पर निर्भर है। यूहन्ना 3:16 कहता है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि, उसने ... दे दिया ... ।" दूसरे, यह हमारे द्वारा उसकी भेंट को विश्वास तथा आज्ञाकारिता के साथ ग्रहण करने पर निर्भर है। इब्रानियों के लेखक ने लिखा, "और सिद्ध बन कर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया" (इब्रानियों 5:9)। परमेश्वर ने एक समूह को उद्धार के लिए चुना है और एक समूह को नाश के लिए। हम या तो उसके प्रति विश्वास तथा आज्ञाकारिता को चुनकर उद्धार को चुन सकते हैं, या हम उसके पुत्र को अस्वीकार करके (यूहन्ना 12:48) विनाश चुन सकते हैं।

थिस्सलुनीकियों ने आज्ञापालन किया था, जो पौलुस द्वारा उनके विवरण से स्पष्ट है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:13)। उसने लिखा, तुम "हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे" (आयत 6)। पौलुस मसीह के अनुकरण के लिए प्रयासरत रहता था, और वह चाहता था कि अन्य भी उसके उदाहरण का पालन करें (1 कुरिन्थियों 11:1)। इसलिए, उसका कहना, "यहाँ तक कि मकिदुनिया और अख्या के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने" (आयत 7), उनके आज्ञाकारी होने की उसकी सराहना थी तथा वह औरों को प्रोत्साहित कर रहा था कि उनके उदाहरण का अनुकरण करें।

आज मसीही "*परमेश्वर के प्रिय*" हैं। क्योंकि थिस्सलुनीकियों ने आज्ञा पालन किया था, इसलिए पौलुस उनके चुने जाने के लिए निश्चित था। इसी प्रकार से, आज हम भी मसीहियों के चुने हुए होने के लिए निश्चित हो सकते हैं, जब वे आज्ञाकारिता का जीवन जीते हैं। वास्तव में, हम सही गाते हैं,

> चैन और आराम है तुझ पास, येसु, अज़ीज़ चौपान;
> और तेरे प्यार से मुझे, है खुशी बे-बयान;
> सुन, हैं फिरिश्ते गाते, आसमान से खुश-इलहान;
> उनकी शीरीन आवाज़ से, दिल मेरा है शादमान।[11]

पौलुस थिस्सलुनीकियों के चुनाव के लिए आश्वस्त था, और हम अपने

चुनाव के लिए आश्वस्त हो सकते हैं। EE

स्मरण रखने के लिए एक उदाहरण (1:6–8)

सुसमाचार को ग्रहण करने के तुरंत बाद थिस्सलुनीकियों पर सताव आया। परन्तु, इस सताव के आने पर भी वे आनंदित हुए क्योंकि वे जानते थे कि वे अनन्त जीवन के उत्तराधिकारी बन रहे हैं। उनके दृढ़ विश्वास का समाचार उस इलाके में फैल गया, और वे मकिदुनिया और अख्या के सभी विश्वासियों के लिए उदाहरण बन गए। उन्होंने सुसमाचार को सहर्ष ग्रहण किया था, और उसे स्वीकार कर लेने के पश्चात कठिनाइयों में भी वे विश्वासयोग्य थे।

कोई व्यक्ति खेल-कूद में पारंगत होने का उदाहरण बन सकता है, परन्तु यह उदाहरण समय के साथ धूमिल हो जाता है। थिस्सलुनीकियों के भाई दृढ़, विश्वासयोग्य मसीही होने के उदाहरण हुए। इस प्रकार के उदाहरण समय की कसौटी पर खरे उतरते हैं और अन्य सभी उदाहरणों के ऊपर ठहरते हैं। हम विश्लेषण करें कि कैसे थिस्सलुनीके अन्य लोगों के लिए उदाहरण बन गए।

वे अनुकरण करने के उदाहरण थे। वे जानते थे किसका अनुकरण करना चाहिए - यीशु और पौलुस का। वे सताव के समय में मसीह और पौलुस के समान थे। किसी भी जन को उदाहरण बनने से पहले, अनुकरण करने वाला होना चाहिए। किसी ने कहा है, "हर कोई जन्म के समय तो मौलिक परन्तु मृत्यु के समय तक प्रति लिपि हो जाता है।" थिस्सलुनीके यीशु और पौलुस की प्रतिलिपियाँ बन गए थे।

वे दृढ़ता में उदाहरण थे। जब कठिन समय आए तो उन्होंने हार नहीं मानी। परमेश्वर का वचन उनके हृदयों में गहराई से बसा हुआ था, और उनका समर्पण सताव की आँधियों के सामने हलका नहीं पड़ा।

वे आनन्द के उदाहरण थे। वे उस आनन्द को प्रतिबिंबित करते थे जो पवित्र आत्मा के आज्ञाकारी होने से आता है, आँधियों में भी और शान्त समयों में भी। इस प्रकार का आनन्द सब को प्रभावित करता है, उच्च आत्मिक जन से लेकर घोर पापी तक को।

वे विश्वास के उदाहरण थे। उनका विश्वास ना तो स्वयं पर था और ना ही सकारात्मक विचारों पर, परन्तु परमेश्वर पर। वे परमेश्वर में विश्वास करते थे!

थिस्सलुनीकियों ने हमारी सहायता की है कि हम औरों की सहायता कर सकें। जो सर्वोत्तम हम औरों के लिए कर सकते हैं वह है अपने उदाहरण के द्वारा उनकी अगुवाई करें - यीशु के अनुकरण में, सताव में भी विश्वासयोग्य रहने में, अविरल आनन्द में, और परमेश्वर में विश्वास में। EC

अनुकरण के लिए उदाहरण (1:6–10)

अनुकरण करना लोगों में प्रबल प्रवृत्ति है। बच्चे अन्य बच्चों तथा वयस्कों का अनुकरण करते हैं। वयस्क भी औरों के अच्छे, बुरे उदाहरणों का अनुकरण करते हैं। खिलाड़ी, व्यापारी, और व्यवसायी औरों के कार्यों का अनुकरण करते हैं जिससे निपुणता को विकसित कर सकें तथा अपने उद्देश्यों और जीविकाओं में आगे बढ़ सकें। हम औरों की सफलताओं का अनुकरण करते हैं और जहाँ वे विफल हो गए वहाँ हम सफल होने के प्रयास करते हैं।

अध्याय 1 के पिछले भाग में अनुकरण करने के विषय में बहुत कुछ कहा गया है। पहला थिस्सलुनीकियों 1:6–10 सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया देने के पश्चात थिस्सलुनीकियों के महान आरंभ का वर्णन करता है। उनके कार्य प्रभु तथा अन्य चेलों के जीवनों का अनुकरण थे और अन्य मसीहियों के द्वारा अनुकरण करने के योग्य हैं। इन नए मसीहियों के लिए अन्य भाइयों के जीवन की जानकारी होना उनके अनुभवों का भाग था, और यह वह था जो उन्हें यीशु के पुनरागमन के लिए तैयार होने में सहायता करता।

हमें किसका अनुकरण करना चाहिए और हम यह कैसे कर सकते हैं? हमें किसके लिए उदाहरण बनना चाहिए?

मसीही आदर्शों का अनुकरण करें (1:6)। एक आमतौर से कही जाने वाली बात है "मसीहियत सिखाने के स्थान पर दिखाना अधिक अच्छा होता है" - अर्थात परमेश्वर की इच्छा को सीखने के लिए शिक्षाओं को सुनने के स्थान पर उन्हें किसी के जीवन में कार्यान्वित होते देखना अधिक सरल होता है। कही जाने वाली एक अन्य बात है "मसीहियत दिखाने के स्थान पर उसे सिखाना अधिक अच्छा होता है" जो परमेश्वर के सिद्ध वचन को जानने पर ज़ोर देती है, तथा इस बात पर कि प्रत्येक मसीही व्यवहार में अपूर्ण है इसलिए वह एक अपूर्ण नमूना है।

बाइबल की सच्चाई यह है कि मसीहियत सबसे अच्छी तब सीखी जाती है जब उसे दोनों ही, सिखाया तथा दिखाया जाता है। हमें परमेश्वर की इच्छा को सिखाया जाना चाहिए, परन्तु हमें औरों के जीवनों में मसीही व्यवहार को देखने की भी आवश्यकता होती है। परमेश्वर ने हमें यीशु में एक सिद्ध जीवन का उदाहरण दिया है। जब थिस्सलुनीकियों को सुसमाचार सिखाया गया, वे यीशु के समान कार्य करके परमेश्वर की इच्छा को करना चाहने लगे। साथ ही उन्होंने अपने शिक्षकों के व्यवहार का अनुकरण किया (1:6)। इससे जो शिक्षक हैं उन्हें उस संभावित हानि के प्रति अति सचेत होना चाहिए जो उनके आचरण के कारण औरों के पथभ्रष्ट हो जाने से हो सकती है। साथ ही, हमें इसके लिए भी सचेत रहना चाहिए कि ईश्वरीय जीवन दूसरों के लिए कितना सामर्थी हो

सकता है जब वे परमेश्वर के वचन को कार्यान्वित तथा उस जीवन के उदाहरण का अनुकरण करें।

जबकि अधिकांश मसीहियों के लिए "बड़े क्लेश" दूर का विचार है, थिस्सलुनीकियों के लिए वह एक बोझ उसी दिन से हो गया था जिस दिन से उन्होंने सुसमाचार का पालन किया था। प्राचीन संसार के अधिकांश शहर कुछ सौ परिवारों के ही होते थे। जब ऐसे छोटे समुदायों में सुसमाचार प्रचार होता था तो जिन्होंने भी अपनी मान्यताओं को बदला था उनके बारे में सभी को ज्ञात हो जाता था। दैनिक पारिवारिक पूजा, मंदिर में पूजा, निर्धारित उत्सव, और वार्षिक तीर्थ यात्राएं - सभी जो मिथ्या देवताओं के लिए किए जाते थे - अब मसीहियों के जीवन का भाग नहीं रह जाते थे। उनके घरों में कोई मूर्तियाँ नहीं रहतीं; वे मंदिर में चढ़ाए बलिदानों में सहभागी नहीं होते; वे धार्मिक शोभायात्राओं से अनुपस्थित रहते। पड़ोसी जान लेते थे और इसे पसन्द नहीं करते थे। निन्दा, बहिष्कार, और ताड़नाएं मसीही होने का भाग थीं।

इन परिस्थितियों के होते हुए भी, थिस्सलुनीके के मसीही आनन्द से परिपूर्ण थे। हमारे लिए यह समझना कठिन है! ऐसा रवैया उन्होंने कैसे विकसित कर लिया? मानवीय आत्मा - उसके दुःख, भेद-भाव, और पृथक किए जाने की भावना के स्थान पर - अब पवित्र आत्मा आ गई थी, जो इन मसीहियों को परमेश्वर के प्रेम और मित्रता, परमेश्वर की शान्ति तथा सुरक्षा, परमेश्वर द्वारा पूर्ति और भविष्य के लिए आश्वस्त करती थी। जब वे इन आशीषों पर मनन करते, वे आनंदित हो सकते थे। उन्होंने पौलुस को ऐसा व्यवहार करते देखा था, क्योंकि उसने अपनी "हर परिस्थिति में संतुष्ट रहना" सीख लिया था (फिलिप्पियों 4:11)।

अब वे मूर्तिपूजा से अलग थे। वे अब अपने संबंधियों तथा पड़ोसियों के धार्मिक उत्सवों से अलग थे। यह चुनाव उनका था। उन्होंने देखा था कि परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के अनुकरण के द्वारा उन्होंने जीवन का सर्वोत्तम मार्ग चुना था। इस बात से उन्हें बहुत कठिनाइयों में भी दृढ़ बने रहने के लिए प्रोत्साहन मिला। क्या हम उस भिन्नता को देख सकते हैं? क्या हम सही चुनाव कर सकते हैं? क्या हम प्रभु के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं, यह जानते हुए कि यही जीवन का सर्वोत्तम मार्ग है?

दूसरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण बनें (1:7)। हमारे लिए परमेश्वर के मार्ग को चुनना सबसे अच्छा है, परन्तु हमारा यह चुनाव करना औरों के लिए भी भला होता है। परमेश्वर ने सदा ही अपने लोगों को औरों को अपने बारे में सिखाने में सहायक होने के लिए प्रयोग किया है।

प्रेरितों के काम ना केवल हमें थिस्सलुनीके में मसीहियों के बारे में बताते हैं, वरन फिलिप्पी और मकिदुनिया के बिरिया में, और अथेने और अख्या के

कुरिन्थुस के भी। अनेकों कलीसियाओं के अनेकों मसीहियों ने, इन भाइयों सहित, सुसमाचार के प्रति कठिन परिस्थितियों में भी थिस्सलुनीकियों की आनन्दपूर्ण प्रतिक्रिया के बारे में सुना, और वे उनके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित हुए। कठिन परिस्थितियों में इससे उन्हें सहायता मिली। स्पष्टतः अन्य कलीसियाओं के समाचार मसीही वातावरण का भाग थे जिससे मण्डलियों को परिपक्व होने में सहायता मिलती थी।

हम कभी-कभी सोचते हैं कि स्थानीय कलीसियाओं में जो चल रहा है औरों का उससे कोई संबंध नहीं है। कलीसियाओं के बीच संबंधों के बारे में परमेश्वर की इच्छा इससे भिन्न है। हमने कभी-कभी स्वायतः परमेश्वर के मार्गदर्शन में मण्डली द्वारा अपने कार्यों का संचालन करना का गलत अर्थ स्वतंत्र और एकाकी होना समझ लिया है। बाइबल का उदाहरण है कि हम अपने समाचार औरों के साथ बाँटें। संसार के दूसरे भाग, ऑस्ट्रेलिया में भी, लोग यह जानते हैं कि थिस्सलुनीके की इस नई कलीसिया में दो हज़ार वर्ष पहले क्या चल रहा था!

जब हम इसका ध्यान करते हैं कि अधिकारी उनकी ताड़ना करते थे और पड़ोसी उनका उपहास करते थे, तो यह हमें अपनी कठिनाइयों का सामना करने में सहायता करता है। थिस्सलुनीके के मसीहियों के लिए नौकरी मिलना, भोजन और जीवन के लिए आवश्यक अन्य वस्तुएं क्रय करना, और पड़ोसियों में मित्र पाना कठिन रहा होगा। हमें इन आरंभिक मसीहियों के समान कठिनाइयों का सामना चाहे करना पड़े या ना करना पड़े, हमारे आत्मिक कल्याण और उन्नति पर बने हुए खतरे बहुत वास्तविक हैं। यह जानना कि अन्य लोग विरोध के होते हुए भी विश्वासयोग्य बने रहे हैं हमारी भी सहायता करता है कि दृढ़ मानसिकता के साथ डटे रहें।

छोटी से छोटी मण्डली भी नगर, प्रांत, देश, और महाद्वीप के अन्य लोगों को प्रोत्साहित करने वाला उदाहरण हो सकती है यदि उसके सदस्य कठिन परिस्थितियों में भी अपनी मसीही व्यवहार का पालन करने के लिए तत्पर हों। बहुधा हम सोचते हैं कि केवल बड़ी मण्डलियाँ ही हमारा उदाहरण हो सकती हैं, परन्तु इन नए मसीहियों के प्रभाव से हमें स्मरण रहना चाहिए कि छोटी मण्डली का एक ही तत्पर जन आस-पास की सबसे बड़ी कलीसिया के लिए उदाहरण बनने में सहायक हो सकता है।

उदाहरण बनने के लिए औरों का नेतृत्व करें (1:8)। थिस्सलुनीके में जैसे-जैसे सुसमाचार फैलता गया, शिक्षकों के लिए कार्य समाप्त होता गया! अब विद्यार्थियों ने इसे ले लिया था। अपने पाठ भली-भांति सीखने के पश्चात, नए मसीही अन्य सभी लोगों को सुसमाचार के बारे में बता रहे थे। केवल उसी इलाके में ही नहीं, वरन सारे संसार में, लोग सुसमाचार और उससे लाभ प्राप्त

करने के बारे में सुन रहे थे, थिस्सलुनीके में होने वाले कार्य के विषय लोगों ने इतने उत्साह से बताया (1:8)। पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस को लोगों को यह बताने के लिए आस-पास कहीं जाना नहीं पड़ा, कि जो हुआ था वे उसके बारे में जाकर सुनें। सन्देश और उसके परिणाम शिक्षकों से भी अधिक वेग से फैले।

वास्तविक विश्वास लोगों के जीवनों को भली रीति से परिवर्तित करेगा। अन्य जो उन परिणामों को देखेंगे वे उसके कारणों को जानना चाहेंगे और उसे आगे पहुँचाएंगे! बुरा समाचार इसलिए शीघ्रता से फैलता है क्योंकि वह चौंका देने वाला और असामान्य होता है। वास्तविक मसीहियत भी ऐसी ही चौंका देने वाली और ऐसे ही असामान्य हो सकती है, परन्तु यह आकर्षक भी होती है और धोखे, संदेह, तथा असुरक्षा की इस हताशा से भरे संसार में इसकी बहुत आवश्यकता है। मण्डली का एक ही व्यक्ति सारी कलीसिया को नियमित भला समाचार सुनाने में सहायक हो सकता है। एक ही व्यक्ति स्थानीय मण्डली का समाचार अन्य अनेकों तक फैला सकता है। परमेश्वर को अच्छा लगता है जब लोग उसकी कलीसिया के बारे में सकारात्मक बातें करते हैं। इससे उसका आदर और आत्माओं की सहायता होती है। हम अच्छे समाचारों की कई गुणा वृद्धि करें जिससे मसीही जो भलाई अन्य लोगों में देखते तथा सुनते हैं उसका अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित हों।

उदाहरण बनना चुनें (1:9, 10)। अनुकरण करने के लिए पहला कदम होता है चुनाव करना। जो लोग अनेकों देवताओं को मानते थे, पौलुस ने उनसे उसी एकमात्र सच्चे परमेश्वर के बारे में बात की जिसे अथेने के लोग जानते नहीं थे (प्रेरितों 17:22–31)। उसने कहा कि यह परम सामर्थी, सर्वोच्च ज्ञान, और सर्वोत्तम प्रेम का परमेश्वर है। उसकी तुलना में अन्य कोई भी देवता निम्न है। सबसे बड़ा आश्चर्य परमेश्वर की महिमा नहीं, वरन उसकी निकटता थी, क्योंकि "वह हम में से किसी से दूर नहीं" (आयत 27)। परमेश्वर को एक ऐसे पिता के समान कहा गया है सब स्थानों के लोग जिसकी सन्तान हैं और जो अनेकों बातों में उसके समान हो चुके हैं। थिस्सलुनीके वाले मूर्ति पूजा और सच्चे परमेश्वर का अनुसरण करने के अन्तर को देख सकते थे।

उनकी अनेकों-देवताओं को मानने की परवरिश होते हुए भी, थिस्सलुनीकियों ने अन्तर को देखा था और निम्न को छोड़कर उत्तम का आनन्द लेने के लिए आतुर थे (1:9, 10)। उन्होंने निर्णय लिया कि वे धौंस जमाने और स्वार्थी यूनानी देवताओं के समूह के स्थान पर एक ऐसे परमेश्वर के पीछे हो लेंगे जो उनके साथ ऐसा मृदु व्यवहार करे जैसे पिता अपने बच्चों के साथ करता है। उन्होंने विकल्पों के बारे में विचार किया और निर्णय लिया। उन्होंने अनेकों को छोड़कर एक को गले लगाना चुना। यह उनका अपना चुनाव था ना कि

अन्य देवताओं से आई आज्ञा।

यह हमारे लिए महत्वपूर्ण पाठ है। परमेश्वर अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठतर है। परमेश्वर का वचन अन्य सभी ज्ञान से उत्तम है। परमेश्वर के मार्ग अन्य किसी भी जीवन शैली से उच्च हैं। लेकिन, वह हम पर दबाव नहीं डालता है कि हम उसका अनुसरण करें। मसीही बनना और परमेश्वर के मार्गों में बने रहना चुनाव के द्वारा है। इसमें कोई दबाव नहीं है - केवल आशीष का लाभ, यदि हम परमेश्वर द्वारा गोद लिए जाने को चुन लें। उसके वचन का पालन करने तथा उसके मार्गों के अनुसार जीने का निर्णय लेकर परमेश्वर के पक्ष में चुनाव करें!

यदि हम परमेश्वर और उसके अनुयायियों का अनुकरण करने का चुनाव करते हैं, तो उसे अपना अगुवा बनाने के लिए हमारे पास कोई प्रेरणा, कुछ कारण होने चाहिए। यीशु का पुनरुत्थान और उसके पुनःआगमन की प्रतिज्ञा उस सुसमाचार के जिसके प्रति इन मूर्तिपूजक अन्यजातियों ने प्रतिक्रिया दी थी, नाटकीय भाग थे। उस एकमात्र सच्चे परमेश्वर के पुत्र से मिलने की तैयारी में ये मसीही बड़ी प्रतीक्षा से भर गए थे। यीशु ही ने अपने प्राण दिए थे कि उसके लोग परमेश्वर से प्रत्यक्ष, बिना किसी हानि के, मिल सकें। यीशु से मिलना बड़े आनन्द और कृतज्ञता से भरा अनुभव होगा; यह उससे मिलने का अवसर होगा जिसने उनके - तथा हमारे - बारे में इतना ध्यान किया कि वह क्रूस पर मरने के लिए तैयार हो गया। थिस्सलुनीके परमेश्वर के समान होना चाहते थे, उसकी ओर होना चाहते थे; लेकिन उनके सामने परमेश्वर के साथ, उसकी बगल में *होने* की भी संभावना थी!

निष्कर्ष। परमेश्वर चाहता है कि हमारे पास मसीही जीवन जीने के लिए उदाहरण हों। उसने यह कार्य यीशु के जीवन से आरंभ किया। उसने इस कार्य को सुसमाचार फैलाने वाले प्रेरितों द्वारा जारी रखा। उन में से प्रत्येक ने मसीही शिक्षकों और अन्य अनुयायियों के लिए उदाहरण ठहराया। थिस्सलुनीके की कलीसिया ने उनके उदाहरण का अनुसरण किया और इसे दूसरों तक पहुँचा दिया। क्या हम इस नमूने का अनुसरण करने के लिए तैयार हैं? TP

एक अच्छे उदाहरण की सामर्थ्य (1:8–10)

थिस्सलुनीके परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता के अच्छे उदाहरण थे। पौलुस द्वारा "उदाहरण" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द था *tupos*, जिसका अर्थ है "प्रकार," "आदर्श," या "नमूना।"[12] केवल यही एक मण्डली है जिसके वर्णन को पौलुस ने नमूना कहा।

उनका अच्छा *उदाहरण प्रभावी था।* पौलुस ने कहा, "क्योंकि तुम्हारे यहाँ से प्रभु का वचन सुनाया गया" (आयत 8)। मूल भाषा का तात्पर्य गूँजने या प्रतिध्वनि देने से है। थिस्सलुनीके गूँज उत्पन्न करने वाले बन गए थे, और उनकी

विश्वासयोग्यता का सन्देश मकिदुनिया (यूनान के उत्तरी भाग में स्थित) से लेकर अख्या (यूनान के दक्षिणी भाग में स्थित) तक सुनाई दिया। उनका भला उदाहरण सारे प्रायद्वीप में जाना गया।

आयत 9 में, पौलुस ने कहा कि इन इलाकों के लोगों ने थिस्सलुनीके के लोगों के भले कार्यों के बारे में "बताया," कि कैसे वे मूर्तियों से मुड़े जिससे "जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करें।" थिस्सलुनीकियों को अज्ञात, उनका उदाहरण बहुत दूर तक गूँजता गया, और सैकड़ों या संभवतः हज़ारों पर अच्छा प्रभाव लाया।

हमारा भला *उदाहरण प्रभावी है*। हम ऐसे विशेष लोगों के बारे में विचार कर सकते हैं जिन्होंने अपने जीवन परमेश्वर की सेवकाई के लिए समर्पित कर दिए हैं। कुछ प्रचारक हैं। कुछ मिशनरी हैं। कुछ शिक्षक हैं जिन्होंने वर्षों के अन्तराल में बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। हमें ऐसे लोगों का सकारात्मक उदाहरण होने के लिए सम्मान करना चाहिए। पौलुस थिस्सलुनीके की मण्डली से प्रेम करता था उसका आदर करता था और इसके अनुसार उनकी सराहना की। जब मसीह में हमारे भाई और बहिन हमारे समक्ष वचन की आज्ञाकारिता और प्रभु की सेवकाई के अच्छे उदाहरण रखते हैं तो हमें भी उनसे प्रेम करना चाहिए, उनका आदर करना चाहिए, और उनकी सराहना करनी चाहिए। EE

संक्षेप में परिवर्तन (1:9, 10)

पौलुस थिस्सलुनीकियों के परिवर्तन की चर्चा की ओर लौट कर आता है। संभवतः इस कलीसिया के अधिकांश सदस्य अन्यजाति थे।

उनके परमेश्वर की ओर आने का वर्णन दो छोटी आयतों में दिया गया है। इतना बड़ा मनपरिवर्तन कैसे इतने छोटे स्थान में व्यक्त किया जा सका है, अद्‌भुत है।

उनके मनपरिवर्तन के क्रम क्या हैं?

पाप से। अच्छे समाचार तक पहुँचने के लिए हमें बुरे समाचार से हो कर जाना होता है। परमेश्वर तक पहुँचने से पहले, जो हम हैं और जहाँ हम जा चुके हैं उन्हें छोड़ना ही होगा। उद्धार की ओर उठाया गया सबसे कठिन कदम पश्चाताप है। थिस्सलुनीके अपने परिवर्तन से पहले मूर्तियों की पूजा करते थे। वे पूर्णतया मूर्तिपूजक होने से परमेश्वर की ओर मुड़े थे।

जेफरी डाहमर पर लगभग तीस पुरुषों और लड़कों को मार डालने का आरोप था, उस पर मुकदमा चला, उसे दोषी पाया गया। सज़ा सुनाए जाने के पश्चात उसने बन्दीगृह में अपना समय व्यतीत करना आरंभ किया। मेरी मौट ने सोचा कि यदि कोई व्यक्ति है जिसे सुसमाचार की आवश्यकता है, तो अवश्य

ही वह डाहमर है। उसने पत्र लिखकर पूछा कि क्या वह पत्राचार द्वारा बाइबल अध्ययन करना चाहेगा। उसने परमेश्वर के वचन के अध्ययन का यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया, और उसने उसे वह अध्ययन भेजा। परमेश्वर की इच्छा के बारे में उसकी समझ बढ़ी, और उसने बपतिस्मा के लिए अनुरोध किया। जैसे वह पाप के अपने पुराने जीवन से परमेश्वर की सेवकाई के जीवन की ओर मुड़ा, बन्दीगृह के एक कुंड में उसका बपतिस्मा हुआ। सुसमाचार सब के लिए है - सबसे बुरे, सबसे भले, और इनके बीच के किसी भी व्यक्ति के लिए!

परमेश्वर की ओर। अभिव्यक्ति "परमेश्वर की ओर मुड़ना" में परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना सम्मिलित है, उसके एकमात्र सच्चा परमेश्वर होने के अंगीकार के पश्चात। पौलुस ने कहा कि, मूर्तिपूजकों के देवताओं की तुलना में, जो असत्य और अस्तित्वहीन हैं, परमेश्वर जीवित तथा सच्चा है। परमेश्वर सच्चा है क्योंकि वह जीवित है, जैसे कि मूर्तियाँ असत्य हैं क्योंकि वे निर्जीव (अस्तित्वहीन) हैं।

प्रतीक्षा के लिए। मसीही जीवन की प्रमुख आशा मसीह का पुनःआगमन है। थिस्सलुनीके पुनःआगमन की तीव्र आशा के साथ जी रहे थे।

"प्रतीक्षा" का यूनानी शब्द उसके सामान्य शब्द का संयुक्त शब्द है, जिसके पहले ऐसा पूर्व सर्ग लगा है जो इस विचार को तीव्र कर देता है, परन्तु अपने आप में जिसका अर्थ "ऊपर" भी होता है। हम इस अर्थ को इस प्रकार देख सकते हैं: वे अपने प्रभु की "प्रतीक्षा" में थे। उनके अन्दर प्रतीक्षा की भावना, जयवन्त आशा, और अक्षय सहनशीलता थी। वे एक व्यक्ति की प्रतीक्षा में थे, किसी घटना की नहीं।

हम स्मरण रखें कि मसीही बनने पर अन्यजातियों को बड़े परिवर्तन का अनुभव हुआ था। वे निर्जीव देवताओं की सेवकाई से बिलकुल विपरीत दिशा में सच्चे परमेश्वर की वफादारी से सेवा करने के लिए चल निकले थे। उनके दिनों में मूर्तिपूजा का प्रचलन था। हर कोई इसे करता था। सच्चे परमेश्वर के आराधक अल्पसंख्यक थे। फिर भी थिस्सलुनीकियों ने सत्य को सीखा, ग्रहण किया, और उसमें आनंदित हुए चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़ी। EC

मूर्तियों से जीवते परमेश्वर की ओर (1:9, 10)

प्रेरितों 17:1–9 पौलुस द्वारा थिस्सलुनीकियों के यहूदी आराधनालय में तीन सब्त के दिनों तक, यीशु के मसीह होने को समझाने और प्रमाण देने के लिए दिए गए तर्कों का विवरण है। अनेकों श्रद्धालु यूनानियों तथा प्रमुख महिलाओं ने इस सन्देश को सहर्ष स्वीकार किया, परन्तु यहूदी अगुवों ने, द्वेष से भरकर, पौलुस के विरुद्ध उपद्रवी मनुष्यों को भड़काया। उन्होंने यासोन के

घर पर हमला किया और यह प्रसिद्ध कथन कहा: "ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा पुलटा कर दिया है, यहां भी आए हैं" (प्रेरितों के काम 17:6ब)। इसके परिणामस्वरूप, पौलुस को थिस्सलुनीके से निष्कासित कर दिया गया, परन्तु ऐसा होने से पहले वह वहाँ कलीसिया स्थापित कर चुका था।

बाद में थिस्सलुनीके की कलीसिया से अच्छा समाचार मिलने के पश्चात, उसने उन्हें यह पत्र लिखा। तीमुथियुस, जब वह मकिदुनिया से आया, पौलुस के साथ हो लिया संभवतः कुरिन्थुस में और थिस्सलुनीके की स्थिति के बारे में उस तक अच्छा समाचार लेकर आया। पौलुस अपनी इस पत्री का आरंभ उनके परिवर्तन और मसीह में बढ़ोतरी के लिए आनन्द के साथ करता है।

"मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे" (1:9)। आयत 9 के पहले भाग में, पौलुस ने कहा, "... तुम मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे।" प्राचीन संसार में थिस्सलुनीके मूर्तिपूजा से भरा स्थान था। यह आज तक बचा हुआ है और आज के यूनानी इसे सालोनिका कहते हैं। आज भी यह एक फलता-फूलता शहर है, कुछ सीमा तक इस लिए क्योंकि इसकी पहुँच समुद्र तक है। प्रथम शताब्दी में, रोम का एक बहुत प्रमुख मार्ग, एग्नेश्यन मार्ग, थिस्सलुनीकियों से होकर जाता था।

एक पूरे दिन में थिस्सलुनीकियों से ओलम्पस पर्वत, जो यूनानी देवताओं का निवास स्थान माना जाता था, दिखाई देता था। जो लोग ओलम्पस पर्वत से अधिक दूरी पर नहीं रहते थे उनके लिए हमारी आशा यही होगी कि वे यूनानी देवताओं के आराधक होंगे। आयत 9 स्पष्ट संकेत देती है कि जिन लोगों ने प्रचार को सुना और सुसमाचार को ग्रहण किया, वे पहले यूनानी देवताओं के आराधक थे।

पौलुस ने उनके लिए कहा, "तुम मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे।" यह शब्द "फिरे" उसी मूल शब्द से आया है जिसे प्रेरितों 3:19 (KJV) में "परिवर्तित" अनुवाद किया गया है। ये लोग परिवर्तित किए गए थे। परिवर्तन क्या है? यह मुड़ जाना है। फिरने का मूल एवं मध्य बिन्दु परिवर्तन है।

जिस शब्द का अनुवाद "फिरे" हुआ है वह "पश्चाताप" अनुवाद किया गया शब्द नहीं है। "पश्चाताप" शब्द *मेटानोइया* से आया है और इसका अर्थ होता है मन का बदला जाना। दिवंगत चार्ल्स रॉबर्टसन कहा करते थे, "पश्चाताप का अर्थ है 'नया मन प्राप्त करना।'" ये दोनों बिलकुल एक ही शब्द तो नहीं हैं, परन्तु इनके अर्थ लगभग एक समान हैं। बहुधा ये एक ही आयत में एक साथ प्रयुक्त होते हैं, जैसे प्रेरितों 3:19 में। पौलुस ने कहा, "तुम फिर गए। तुम ने विपरीत दिशा ले ली। तुमने नया मन प्राप्त कर लिया है, और तुम्हारा जीवन परिवर्तित हो गया है।"

"ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो" (1:9)। पौलुस ने आगे

कहा कि वे मूर्तियों से इसलिए फिरे "ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करें।" जिस परमेश्वर का प्रचार पौलुस करता था वह "जीवता और सच्चा" परमेश्वर है। ओलम्पस पर्वत के देवता तो निर्जीव और असत्य थे। ज़्युस और अन्य देवताओं का कोई यथार्थ नहीं था।

वे "सेवा" करने के लिए फिरे। हम में से कुछ जन भी फिरे हैं; परन्तु प्रकटतः, हम वास्तव में सेवा करने के लिए नहीं फिरे। इस अध्याय में, इससे एकदम पहले की आयतों में, हम उनकी सेवा के बारे में कुछ देखते हैं। पौलुस ने उनकी सराहना इन शब्दों के साथ की "क्योंकि तुम्हारे यहाँ से ... प्रभु का वचन सुनाया गया ..." (आयत 8)। वह पहले ही उनके विश्वास के कार्य और प्रेम के परिश्रम के बारे में कह चुका था। यह एक सक्रिय, उद्यमी, जीवंत कलीसिया है जिसकी प्रेरणा विश्वास तथा प्रेम द्वारा कार्य करने से थी। एक प्रचारक ने कहा, "कुछ फिरे हैं ताकि 'कुछ ना करें' नामक चौकी पर बैठकर 'कम कार्य' नामक डंडे को छीलते रहें, साथ ही गाएं कि 'मैं महिमा के मार्ग पर हूँ।'" लेकिन थिस्सलुनीकियों के साथ ऐसा नहीं था।

भरोसा विश्वास के केन्द्र में होता है। "विश्वास" की परिभाषा प्रभु यीशु मसीह में भरोसा और उसकी आज्ञाकारिता है। यदि हमारे जीवन कार्यों से तो भरे हुए हैं, परन्तु हम भरोसा नहीं करते हैं, तो हम में विश्वास के एक महत्वपूर्ण भाग का अभाव है।

"उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो" (1:10)। पौलुस ने यह भी कहा, "तुम प्रतीक्षा के लिए फिरे।" वे मृतकों में से जी उठे यीशु की प्रतीक्षा के लिए फिरे। क्या यह पौलुस की एक विशेषता नहीं है? लेकिन स्मरण रखें कि जब पौलुस ने कहा कि यीशु वापस आ रहा है, तो उसने केवल यह कहकर कि "वह वापस आ रहा है" अपने श्रोताओं को बिना किसी प्रमाण के नहीं छोड़ दिया। उसने उसके वापस आने का प्रमाण दिया। उसने प्रेरितों 17:30, 31 में कहा, "... परमेश्वर ... अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है, क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है।" प्रमाण कहाँ है? पौलुस ने आगे कहा "उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" यही महान आधारभूत सत्य इस बात का आश्वासन है कि वह वापस आ रहा है। उसने खाली कब्र के द्वारा हमें यह आश्वासन दिया है कि वह वापस आएगा। इसलिए मसीही जीवन प्रतीक्षा करने का तो है, परन्तु निष्क्रिय और आलसी प्रकार की प्रतीक्षा नहीं। यह एक जीवित, उद्यमी प्रतीक्षा है।

यही तथ्य कि हम उसके लौटने की बाट जोह रहे हैं एक प्रकार का आत्मिक प्रेरक है जो हमें विश्वासयोग्य कार्य तथा सेवकाई के लिए प्रेरित करता है।

प्रतीक्षा करते हुए हम कार्य करते हैं; प्रतीक्षा में हम सेवा करते हैं। हम प्रत्येक दिन का स्वागत इस विचार के साथ करते हैं कि यही "वह दिन" हो सकता है, और यही बोध हमें सेवा के लिए सक्रिय करता है। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों से कहा कि मसीह इतना शीघ्र भी नहीं आने वाला है जितना वे समझ रहे हैं। इसलिए उसके आने की प्रतीक्षा के समय में जो सबसे अच्छा कार्य वे कर सकते हैं वह है अपने कार्यस्थल के कार्यों को करना।

उपसंहार: थिस्सलुनीके के वासी मसीही कैसे बने थे? "क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि ... तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है" (1 थिस्सलुनीकियों 1:9, 10)। वे मूर्तियों से फिरे थे। वे जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करने के लिए फिरे थे। वे यीशु के पुनःआगमन की प्रतीक्षा करने के लिए फिरे थे।

यीशु मसीह ही वह अन्तर है, क्योंकि उसके बिना, हम एक आशाहीन अन्त, एक आशाहीन कब्र, एक आशाहीन पुनरुत्थान, एक आशाहीन अनंतकाल का सामना करते हैं; लेकिन उसके साथ हमारे पास स्वर्ग और पृथ्वी दोनों हैं। AM

समाप्ति नोट्स

[1]लिओन मौरिस, *दि फर्स्ट एण्ड सैकण्ड एपिसल टू दि थिस्सलोनीयनस*, दि न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री आन दि न्यू टेस्टामेंट (ग्रेंड रेपिडस, मिशिगन: डब्लयुएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1959), 47. [2]*थियोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ दि न्यू टेस्टामेंट*, एथलबर्ट स्टाउफर, "ἀγαπάω" में, सम्पादक, गर्हार्ड किट्टल, ट्रांस और संशोधित, जेफ्री डब्ल्यू. बामिले, वाल. 1 (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: डब्ल्युएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1964), 44-48. [3]मौरिस, 51. [4]ए. टी. रॉबर्टसन, *दि एपिसल ऑफ पॉल,* वाल. 4, *वर्ड पिक्चर इन दि न्यू टेस्टामेंट* (नेशविलेः ब्रॉडमैन प्रैस, 1931), 9. [5]जे. ई. फ्रेम, *ए क्रिटीकल एण्ड एक्सेजेटीकल कमैंट्री ऑन एपिसल ऑफ सेंट पॉल टू दि थिस्सलोनीयनस*, दि इंटरनेशनल क्रिटीकल कमैंट्री, सम्पादक चार्ल्स अगस्तुस ब्रिग्गस, सैमूएल रोल्ले, और एलफ्रेड प्लम्मर (न्यू यार्कः चार्ल्स स्क्राइबनरस संस, 1912; पुनः मुद्रण, एडिनबर्गः टी. एण्ड टी. क्लॉर्क, 1988), 81. [6]रॉबर्टसन, 12. [7]इबिद. 13. [8]इबिद. 14. [9]रॉबर्टसन, 14. [10]रेमन्ड सी. केल्सी, *द लेटर्स ऑफ़ पौल टू द थिस्सलोनियन्स*, द लिविंग वर्ड कॉमेन्ट्री, वोल. 13 (ऑस्टिन, टेक्स.: आर. बी. स्वीट को., 1968), 28.

[11]फैनी जे. क्रॉस्बी, "सेफ इन द आर्म्स ऑफ जीसस," *सौंग्स ऑफ द चर्च*, कौम्प. एण्ड एड. ऐलटन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मौनरो, ला.: हॉवर्ड पबलिशिंग को., 1977)। [12]वॉल्टर बॉयर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकौन ऑफ द न्यू टेस्टामेन्ट एन्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर*, 3ड एड., रिव. एन्ड एड. फ्रेड्रिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2000), 1019–20.